

बहादुर टॉम

इस पुस्तक के मूल लेखक के सम्बन्ध में

मार्क ट्वेन

इस संसार-प्रसिद्ध पुस्तक 'बहादुर टॉम' के लेखक मार्क ट्वेन का असली नाम सैमुअल लैंगहार्न क्लेमेंस था। इनका जन्म १८३५ में अमरीका के मिसौरी क्षेत्र में मिसीसिपी नदी के किनारे के एक गाव हानिबाल में हुआ था।

मार्क ट्वेन का आरंभिक जीवन बड़ी कठिन परिस्थितियों में बीता। इन्हें शिक्षा के लिए अधिक समय नहीं मिल सका और जीवन-निर्वाह के लिए तरह-तरह के काम करने पड़े, जिनमें मिसीसिपी नदी में स्टीम बोट चलाने का काम भी था।

इन्हीं दिनों के अपने अनुभवों के आधार पर, बाद में मार्क ट्वेन ने 'बहादुर टॉम' जैसी कई सुन्दर रचनाएं लिखीं, जिनमें से कुछ विश्व-साहित्य की अमर कृतियों मे मानी जाती हैं। मार्क ट्वेन की मृत्यु १९१० में हुई।



बहादुर टॉम

"टॉम !"

कोई उत्तर नहीं ।

"ग्रो टॉम ! ग्राखिर हो क्या गया है इस लड़के को ? ग्रो टॉम !"

बूढ़ी पाली मौसी ने ग्रपना चश्मा नाक पर नीचे गिराकर, उसके ऊपर से कमरे में चारो ग्रोर नजर दौड़ाई । फिर उन्होंने चश्मे को माथे पर चढ़ाकर चारों ग्रोर देखा । चश्मे के ग्रन्दर से शायद ही कभी उन्होंने देखने की कोशिश की हो । ग्रौर सच तो यह है कि वह चश्मा ग्रांख की कमजोरी के कारण नहीं फैशन के लिए लिया गया था । वे थोड़ी देर तक उलभन में पड़ी खड़ी रहीं, फिर कर्कश स्वर में तो नहीं किन्तु स्वर को इतना तेज बनाकर जरूर बोलीं कि कम से कम कमरे में रखे फर्नीचर उनकी बात सुन सकें, "ग्राज ग्रगर मैं तुझे पकड़ पाऊं तो मैं···"

किन्तु ग्रपनी बात पूरी नहीं कर सकीं, क्योंकि

उन्होंने झुककर बिस्तर के नीचे झाड़ू पीटना शुरू कर दिया था। किन्तु झाड़ू पीटकर वे बिस्तर के नीचे से एक बिल्ली के अतिरिक्त और कुछ निकाल नहीं सकीं।

"ओफ, ऐसा लड़का तो मैंने कहीं देखा ही नहीं!"

दरवाज़े पर जाकर उन्होंने बाग में फैले टमाटर के पौधों और 'जिम्पसन' के वृक्षों के बीच भी देखा मगर कहीं भी टॉम का पता न था। सो अब स्वर को काफी ऊंचा करके चिल्लाईं, "ओ···टॉम!"

तभी हल्की-सी आवाज हुई उनके पीछे और तुरन्त ही मुड़कर धर दबोचा उन्होंने भागते हुए टॉम को। टॉम भाग नहीं सका। "हूं! मुझे इस आलमारी का तो खयाल ही नहीं आया था। इसमें घुसकर क्या कर रहा था तू?"

"कुछ भी तो नहीं।"

"कुछ नहीं! ज़रा अपने हाथों और मुंह को तो देख! यह क्या चुपड़ रखा है हाथ-मुंह में?"

"मुझे कुछ पता नहीं, मौसी?"

"मगर मुझे पता है। यह है मुरब्बा, है न? सैकड़ों बार कह चुकी हूं तुझसे कि मुरब्बा न छुआ कर वरना तेरी चमड़ी उधेड़कर रख दूंगी मारते-मारते। ला, वह कोड़ा मुझे दे!"

और कोड़ा हवा में नाच उठा। टॉम के मुंह पर हवाइयां उड़ने लगीं।

"अरे बाप रे! ज़रा अपने पीछे तो देखो मौसी!"

मौसी तेज़ी से घूम गईं और खतरे से बचने के लिए अपने स्कर्ट को झाड़ने लगीं। बस, टॉम तेज़ी से भाग खड़ा

हुआ । पलक झपकते में चहारदीवारी को एक छलांग में पार कर गायब हो गया वह । क्षण-भर मौसी पाली आश्चर्य में पड़ी खड़ी रह गईं, फिर स्नेहसिक्त हंसी फूट पड़ी उनके मुख से ।

'भाड़ में जाए यह लड़का ! पता नहीं क्यों, मैं कभी कुछ समझ ही नहीं पाती । जाने कितनी बार इस तरह के चकमे दिए होंगे इस लड़के ने मुझे, मगर मैं हूं कि अभी तक उसकी चालाकियों को समझ नहीं पाई । अरे, बूढ़ा तोता कहीं राम-राम पढ़ता है ! लेकिन यह चकमा देने के तरीके भी तो बहुत-से जानता है । एक बार जो तरीका इस्तेमाल कर लेता है, उसे दूसरी बार इस्तेमाल नहीं करता। फिर कोई कैसे जाने कि कब कौन-सी चालाकी चलने जा रहा है यह ? ···मैं जानती हूं कि इस बच्चे के प्रति अपने कर्तव्य का पूरी तरह पालन नहीं कर पा रही हूं मैं । पुस्तकों में लिखा है कि डंडे को अलग रखना बच्चे को खराब करना है । मगर वह बेचारा मेरी स्वर्गीया बहन का बच्चा है, और मैं अपने हृदय को इतना कठोर नहीं बना पाती कि उसकी पिटाई करूं । जब मैं उसे मनमानी करने देती हूं तो मेरी अंतरात्मा मुझे कोसती है; और कभी उसे पीट देती हूं तो मेरा बूढ़ा हृदय दुःख से भर उठता है । ओह ! स्त्री का जीवन कितना कुण्ठा-मय होता है ! ···मैं जानती हूं, आज दोपहर-भर वह 'हूकी' खेलेगा, और मैं बच्चू को दण्ड देने के लिए कल दिन-भर काम में लगाकर समझ लूंगी कि मेरा फर्ज पूरा हो गया। शनिवार के दिन उससे काम लेना कठोरता हो सकती है, क्योंकि सभी बच्चे शनिवार को छुट्टी मनाते हैं । मगर मैं [illegible]

उसके प्रति अपना कर्तव्य कुछ न कुछ तो निभाना ही है। अगर मैं ऐसा नहीं करूँगी तो लड़का बर्बाद हो जाएगा।"

और डॉन सचमुच उस दिन बोर्डिंग-स्कूल 'हर्ली' भेजा गया।

इस मौके पर वह बोर्डिंग को जाने वाला था और बीच-बीच में मौका पाने पर डॉनी हँस-हँसकर बोलता जा रहा था, तभी नानी मौसी ने उससे बड़े मीठे-मीठे सवाल पूछने शुरू कर दिए। वे उससे कुछ ऐसा उत्तर लेना चाहती थीं कि वह स्वयं ही अपनी दिन-भर की शैतानियाँ बयान कर डाले। अन्य सत्-हृदय व्यक्तियों की तरह नानी मौसी भी समझती थीं कि उनके जैसा बुद्धिमान शायद ही कोई और होगा, और यही समझकर डॉन को अपने प्रश्नों के जाल में फँसाने की कोशिश भी करती थीं। मगर डॉन भी पूरा चतुर था। नानी मौसी की हर चाल का अन्दाज़ वह पहले ही पा लेता था और बड़ी सफाई से उनके जाल से बच निकलता था।

आज भी मौसी के प्रश्नों का बहुत सोच-समझकर उत्तर दिया उसने और उनको हर बात में उलझाने की कोशिश करता रहा।

अन्त में मौसी ने अपना सबसे बड़ा प्रश्न किया, "क्यों डॉन," खेल में तेरी कमीज़ का कालर तो नहीं फटा, जिसे मैंने कल ही सिया था? ज़रा अपनी जैकेट तो खोल।"

मगर यह प्रश्न सुनकर डॉन के चेहरे से रही-सही मुस्कान भी गायब हो गई। उसने अपनी जैकेट का बटन खोल दिया। कालर ज्यों का त्यों सिला हुआ था।

मौसी हारकर बोलीं, "देख टॉम, मुझे अच्छी तरह पता है कि तू आज दिन-भर 'हूकी' खेला है और नदी में तैरा है। फिर भी आज मैं तुझे माफ किए देती हूं। लेकिन आगे के लिए याद रख कि ऐसी हरकतें करेगा तो अच्छा नहीं होगा।"

उन्हें इस बात का तो दुःख हो रहा था कि उनकी चाल नहीं चल सकी, किन्तु इस बात की खुशी भी थी कि कम से कम टॉम का व्यवहार आज्ञाकारी लड़के की तरह तो था।

लेकिन तभी टॉम का छोटा भाई सिड बोल उठा, "मगर मौसी, तुमने तो इसका कालर सफेद डोरे से सिया था, पर इसका कालर इस समय काले डोरे से सिया दिख रहा है।"

"हां, हां, मैंने तो सफेद डोरे से सिया ही था। क्यों रे टॉम ?"

किन्तु टॉम ने इन बातों पर ध्यान नहीं दिया। वह कमरे के बाहर चला गया और जाते-जाते सिड को पिटाई करने की धमकी भी देता गया।

एक सुरक्षित स्थान पर पहुंचकर उसने अपनी जैकेट में भीतर की तरफ खोंसी दो बड़ी सूइयों को ध्यान से देखा। एक सूई में सफेद डोरा पड़ा हुआ था और दूसरी में काला। अपने-आप ही जैसे उसके मुंह से निकल गया, 'सिड बीच में न टपक पड़ता तो मौसी कुछ भांप न पातीं। डोरे की तरफ उनका ध्यान ही कहां गया था ?···मुश्किल तो यह है कि मौसी कभी मेरे कपड़े काले डोरे से सी देती हैं कभी सफेद से। और मैं हूं कि इस तरफ ध्यान ही नहीं दे पाता। मगर सिड को तो मैं इसका मजा चखाए बिना मानूंगा नहीं।'

किन्तु दो मिनट में ही वह इस सारे झगड़े को भूल गया। इसलिए नहीं कि उसकी परेशानियां किसी अन्य व्यक्ति की परेशानियों से कम बोझिल थीं, बल्कि इसलिए कि एक नई चीज़ में ध्यान लग गया था उसका, जिसके आगे सब कुछ भूल जाना स्वाभाविक ही था। अभी-अभी उसने एक नये तरीके से सीटी बजाना सीखा था और एकांत में वह अच्छी तरह उसका अभ्यास कर लेना चाहता था। सो टॉम सीटी बजाता घर से निकल पड़ा।

गर्मी की शामें ज़रा लम्बी होती हैं, सो अभी अंधेरा नहीं हुआ था। टॉम ने एकाएक सीटी बजाना बंद कर दिया। उसके सामने एक अपरिचित लड़का खड़ा था—उससे कुछ लम्बा और बहुत बढ़िया कपड़े पहने हुए। दोनों एक-दूसरे से बोले तो नहीं पर एक-दूसरे को बुरी तरह घूरते हुए दोनों गोलाई में घूमते रहे और फिर उनमें तू-तू, मैं-मैं शुरू हो गई, जो बढ़कर पहले हाथापाई और फिर पटकी-पटकौवल में परिवर्तित हो गई।

उस दिन काफी रात गए घर लौटा वह। जब बड़ी सावधानी से वह खिड़की पर चढ़ा तो उसने मौसी को अपनी ही घात में बैठी पाया। मौसी ने जब लड़ाई-झगड़े के कारण बुरी तरह फटे हुए उसके कपड़ों को देखा, तो उसकी शनिवार की छुट्टी को अत्यधिक कार्यव्यस्त दिवस बना देने का उनका इरादा दृढ़ निश्चय में परिवर्तित हो गया।



२

शनिवार की गर्म सुबह। हर तरफ जीवन मुस्करा रहा था, विहंस रहा था। हर व्यक्ति के हृदय में गीतों की धुनें गूंज रही थीं और नौजवान दिलों का संगीत तो उमड़-उमड़कर होंठों से छलका ही पड़ रहा था।

टॉम हाथ में सफेदी की बाल्टी और कूंची लिए हुए घर से निकलकर चहारदीवारी का निरीक्षण करने लगा। उसके चेहरे पर उदासी छा गई। तीस गज लंबी और नौ फुट ऊंची चहारदीवारी। ऐसा लगने लगा उसे जैसे जीवन में कोई रस न हो, जैसे जीवन एक भार बन गया हो। एक आह भरकर उसने कूंची को सफेदी में डुबाकर चहारदीवारी के सबसे ऊपर वाले हिस्से पर चलाया। कई बार चहारदीवारी पर कूंची चलाने के बाद टॉम निराश-सा एक वृक्ष की निचली डाल पर जा बैठा।

तभी घर का नौकर जिम हाथ में बाल्टी लिए गुनगुनाता हुआ निकला। टाउन-पम्प से पानी लाने से टॉम को हमेशा से घृणा थी, किन्तु इस समय वह काम उसे घृणित नहीं

लगा। कम से कम पम्प पर कुछ लड़के-लड़कियों का साथ तो रहेगा, जो पानी लेने के लिए अपनी बारी का इंतजार करते हंसते-खेलते रहते हैं वहां।

टॉम बोला, "सुन जिम, अगर मेरी जगह पुताई करने को तैयार हो, तो ला मैं पानी ला दूं।"

बड़े जोर से सिर हिलाकर जिम बोला, "नहीं मास्टर टॉम, नहीं। मौसी ने मुझे हुक्म दिया है कि सीधे पम्प पर जाकर पानी ले आऊं। उन्होंने कहा है कि उन्हें शक है कि आप मुझसे पुताई करने को कहेंगे। और इसलिए उन्होंने मुझे हुक्म दिया है कि मैं अपना काम करूं, बीच में कहीं रुकूं तक नहीं।"

"उन्होंने क्या कहा, क्या नहीं कहा, इसका ख्याल न करो जिम। वे तो हमेशा ही इसी तरह की बातें बका करती हैं। लाओ मुझे बाल्टी दो, मैं एक मिनट में पानी भर लाता हूं। वे कुछ जान भी नहीं पाएंगी।"

"नहीं, मास्टर टॉम, मौसी मेरी बहुत बुरी तरह कुटम्मस करेंगी।"

"अरे, मौसी भला कभी किसीको मारती हैं या तुझे ही मारेंगी? धमकियां वे जरूर बड़ी भयानक-भयानक देती हैं, मगर धमकियों से चोट तो लगती नहीं। सुन जिम, मैं तुझे कांच की गोलियां दूंगा। मान ले न मेरी बात!"

जिम का मन डोलने लगा। और जब टॉम ने अपने अंगूठे का घाव दिखाने का लालच दिया तो जिम इस लोभ का संवरण नहीं कर सका। बाल्टी जमीन पर रखकर उसने कूंची

ले ली। किन्तु दूसरे ही क्षण जिम हाथ में बाल्टी लेकर तेज़ी से भागा। टॉम घबराकर कूंची लेकर पुताई में लग गया और पाली मौसी विजयोल्लास से भरी हुई हाथ में स्लीपर लिए हुए मैदान से घर की ओर चल दीं।

बड़े उदास भाव से टॉम पुताई में लगा रहा। तभी बेन रोगर्स सेब खाता, स्टीमर चलने की नकल करता, उछलता-कूदता आता दिखाई दिया। टॉम के निकट आकर उसने स्टीमर के कप्तान की हैसियत से स्टीमर रोकने का आदेश दिया। और फिर स्टीमर रुकने की सी आवाज़ मुंह से निकालता हुआ रुक गया।

टॉम पुताई में लगा रहा। उसने स्टीमर की तरफ ध्यान भी नहीं दिया।

बेन क्षण-भर उसे देखता रहा, फिर बोला, "ओहो, तो जनाब आप काम में लगे हैं!"

टॉम ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने एक कलाकार की नज़र से अभी-अभी पुते स्थल को देखा। फिर कूंची को मज़ा लेते हुए चहारदीवारी पर हल्के-से चलाया और फिर उस पुताई का निरीक्षण करने लगा पहले ही की तरह। बेन टॉम के बगल में आ खड़ा हुआ। सेब देखकर टॉम के मुंह में पानी भर आया, किन्तु फिर भी वह अपने काम में ध्यान लगाए रहा।

बेन बोला, "कहो दोस्त, आज भी काम करना पड़ रहा है तुम्हें?"

"अरे, बेन! मेरा तो ध्यान ही तुम्हारी तरफ नहीं

लगा। कम से कम पम्प पर कुछ लड़के-लड़कियों का साथ तो रहेगा, जो पानी लेने के लिए अपनी बारी का इंतजार करते हंसते-खेलते रहते हैं वहां।

टॉम बोला, "सुन जिम, अगर मेरी जगह पुताई करने को तैयार हो, तो ला मैं पानी ला दूं।"

बड़े जोर से सिर हिलाकर जिम बोला, "नहीं मास्टर टॉम, नहीं। मौसी ने मुझे हुक्म दिया है कि सीधे पम्प पर जाकर पानी ले आऊं। उन्होंने कहा है कि उन्हें शक है कि आप मुझसे पुताई करने को कहेंगे। और इसलिए उन्होंने मुझे हुक्म दिया है कि मैं अपना काम करूं, बीच में कहीं रुकूं तक नहीं।"

"उन्होंने क्या कहा, क्या नहीं कहा, इसका ख्याल न करो जिम। वे तो हमेशा ही इसी तरह की बातें बका करती हैं। लाओ मुझे बाल्टी दो, मैं एक मिनट में पानी भर लाता हूं। वे कुछ जान भी नहीं पाएंगी।"

"नहीं, मास्टर टॉम, मौसी मेरी बहुत बुरी तरह कुटम्मस करेंगी।"

"अरे, मौसी भला कभी किसीको मारती हैं या तुझे ही मारेंगी? धमकियां वे जरूर बड़ी भयानक-भयानक देती हैं, मगर धमकियों से चोट तो लगती नहीं। सुन जिम, मैं तुझे कांच की गोलियां दूंगा। मान ले न मेरी बात!"

जिम का मन डोलने लगा। और जब टॉम ने अपने अंगूठे का घाव दिखाने का लालच दिया तो जिम इस लोभ का संवरण नहीं कर सका। बाल्टी जमीन पर रखकर उसने कूंची

ले लो। किन्तु दूसरे ही क्षण जिम हाथ में बाल्टी लेकर तेज़ी से भागा। टॉम घबराकर कूंची लेकर पुताई में लग गया और पाली मौसी विजयोल्लास से भरी हुई हाथ में स्लीपर लिए हुए मैदान से घर की ओर चल दीं।

बड़े उदास भाव से टॉम पुताई में लगा रहा। तभी बेन रोगर्स सेब खाता, स्टीमर चलने की नकल करता, उछलता-कूदता आता दिखाई दिया। टॉम के निकट आकर उसने स्टीमर के कप्तान की हैसियत से स्टीमर रोकने का आदेश दिया। और फिर स्टीमर रुकने की सी आवाज मुंह से निकालता हुआ रुक गया।

टॉम पुताई में लगा रहा। उसने स्टीमर की तरफ ध्यान भी नहीं दिया।

बेन क्षण-भर उसे देखता रहा, फिर बोला, "ओहो, तो जनाब आप काम में लगे हैं!"

टॉम ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने एक कलाकार की नज़र से अभी-अभी पुते स्थल को देखा। फिर कूंची को मज़ा लेते हुए चहारदीवारी पर हल्के-से चलाया और फिर उस पुताई का निरीक्षण करने लगा पहले ही की तरह। बेन टॉम के बगल में आ खड़ा हुआ। सेब देखकर टॉम के मुंह मे पानी भर आया, किन्तु फिर भी वह अपने काम में ध्यान लगाए रहा।

बेन बोला, "कहो दोस्त, आज भी काम करना पड़ रहा है तुम्हें?"

"अरे, बेन! मेरा तो ध्यान ही तुम्हारी तरफ नहीं

गया।"

"मैं तो आज तैरने जा रहा हूं, टॉम ! तुम्हारी भी तो इच्छा हो रही होगी चलने की ?" मगर तुम्हें तो काम करना है, है न ?"

जरा देर टॉम विचारों में खोया खड़ा रहा, फिर बोला, "तुम इसे काम कहते हो ?"

"हां, काम नहीं तो और क्या है यह ?"

टॉम ने फिर पुताई शुरू कर दी और लापरवाही से कहने लगा, "हो सकता है यह काम ही हो, हो सकता है यह काम न भी हो। मगर मैं तो केवल इतना जानता हूं कि टॉम सायर को इसमें बड़ा मजा आ रहा है।"

"तो तुम्हारा मतलब यह है कि यह काम तुम्हें पसंद है ?"

"पसंद है ? भई, पसंद न होने का तो कोई सवाल ही नहीं उठता। किसी लड़के को रोज-रोज चहारदीवारी की पुताई करने का मौका भला मिलता है कहीं ?" और वह उसी तरह कूंची चलाता रहा।

अब तो सारा नक्शा ही बदल गया। बेन ने अपने सेब को कुतरना बंद कर दिया। टॉम ने कूंची इधर-उधर चलाई, फिर पीछे हटकर उसका निरीक्षण किया, फिर आगे बढ़कर एक-दो जगह कूंची चलाई, फिर पीछे हटकर निरीक्षण करने लगा। बेन सब कुछ देखता रहा। टॉम के काम में उसकी दिलचस्पी निरंतर बढ़ती जा रही थी।

अंत में वह बोला, "यार टॉम, जरा मुझे भी पुताई करने दे न भैया !"

टॉम ने जरा सोचा। फिर बेन की बात मानने को हुआ, किन्तु एकाएक उसने अपना निश्चय बदल दिया। बोला, "नहीं, नहीं, बेन, तुमसे यह काम करते नहीं बनेगा। मौसी का कहना है कि इस चहारदीवारी की पुताई बहुत अच्छी होनी चाहिए। घर के सामने सड़क की तरफ वाली चहारदीवारी है न यह, यही मुश्किल है। अगर पीछे वाली चहारदीवारी होती तो मैं तुझे जरूर पुताई कर लेने देता और मौसी भी ध्यान न देतीं, अगर कुछ गड़बड़ी हो भी जाती। मैं जानता हूं बेन, हजार-दो हजार लड़कों में शायद ही कोई ऐसा निकले जो ठीक से पुताई कर सके।"

"अच्छा, ऐसी बात है ? सुनो टॉम, जरा-सी पुताई कर लेने दो न ! मैं तुम्हारी जगह होता तो तुम्हारी बात जरूर मान लेता।"

मैं भी तुम्हारी बात मानना चाहता हूं बेन, मगर पाली मौसी···! देखो न, जिम भी पुताई करना चाहता था, मगर मौसी ने उसे साफ मना कर दिया। सिड भी करना चाहता था, लेकिन उसे भी उन्होंने इजाजत नहीं दी। अब तुम्हीं सोचो, मैं कैसी उलझन में फंसा हूं। अगर मैं तुम्हें पुताई करने दूं और कुछ गड़बड़ी हो जाए तो···"

"मैं बहुत सावधानी से पुताई करूंगा टॉम ! थोड़ी-सी कर लेने दो यार ! अच्छा सुनो टॉम, मैं अपने सेब मे से थोड़ा-सा तुम्हें भी दे दूंगा।"

"नहीं बेन, नहीं, मुझे डर लगता है···।"

"मैं तुम्हें पूरा सेब दे दूंगा टॉम !"

बड़े अनमने भाव से टॉम ने कूंची छोड़ दी, किन्तु उसका मन अत्यधिक प्रसन्नता और उत्साह से भर उठा था। क्षण-भर बाद ही अवकाश-प्राप्त कलाकार टॉम छांह में एक पीपे पर जा बैठा और सेव खाता हुआ अन्य भोले-भाले लड़कों को मूंड़ने योजना मन ही मन तैयार करने लगा। लड़के आते गए और टॉम के जाल में फंसते गए। वे आते टॉम को चिढ़ाने की गरज से, किन्तु फंस जाते पुताई में। बेन को जब तक थकान महसूस होने लगी तब तक टॉम ने बिली फिशर को पतंग के बदले में पुताई करने की इजाज़त दे दी थी। और उसके थकने तक जानी मिलर को एक मरा हुआ चूहा देने के बदले में पुताई करने का मौका मिल गया। उस मरे चूहे की पूंछ में एक डोरी भी बंधी हुई थी, ताकि उसे नचाया जा सके। घंटे पर घंटे बीतते गए और टॉम के पास भेंटों का अंबार लगता गया। सुबह का अकिंचन टॉम इस समय तक खासा मालदार बन चुका था। चॉक के टुकड़े, कांच की गोलियां, पटाखे, कुत्ते का पट्टा, चाकू का हैंडिल, नीली टूटी हुई शीशी का टुकड़ा आदि अनेक बहुमूल्य वस्तुओं का ढेर लग गया था उसके चारों ओर। टॉम सारे लड़कों के साथ हंसता-बोलता मौज से बैठा रहा और चहारदीवारी पर पुताई की तीन कोटिंग भी हो गई। इस समय तक सफेदी खत्म न हो गई होती तो वह शायद गांव के हर लड़के को दिवालिया बना देता।

टॉम मन ही मन सोचने लगा कि संसार वास्तव में उतना निस्सार नहीं है, जितना वह समझ रहा था। अनजाने



ही उसने मानव-मन की एक बहुत बड़ी कमज़ोरी का पता लगा लिया था कि काम वही है जिसे मनुष्य को बिना रुचि के ज़बर्दस्ती करना पड़े।

टॉम पाली मौसी के पास विजय-गर्व से झूमता हुआ गया। बोला, "अब तो मैं खेलने जाऊं न मौसी?"

"अरे, अभी ही! कितनी पुताई कर डाली तूने, यह तो बता?"

"पूरी चहारदीवारी पुत गई मौसी।"

"क्यों झूठ बोलता है रे टॉम…यही तो मुझे बर्दाश्त नहीं होता।"

"झूठ नहीं बोल रहा हूं मौसी चहारदीवारी सचमुच पुत गई।"

इस तरह की बातों में मौसी ने विश्वास करना नहीं सीखा था। वे स्वयं अपनी आंखों से देखने गईं। उन्होंने पूरी की पूरी चहारदीवारी पुती देखी, तो आश्चर्य से आंखें फाड़े देखती ही रह गईं। विह्वल स्वर में बोलीं, "मैंने तो कल्पना भी नहीं की थी कि तू इतनी जल्दी इतनी अच्छी पुताई कर सकेगा।…तो इसका मतलब है कि अगर तू चाहे तो काम भी कर सकता है टॉम!" मगर तुरन्त ही उन्होंने यह भी जोड़ दिया, "लेकिन काम करने का मन तो तेरा बहुत मुश्किल से ही कभी होता है।…अच्छा जा, खेल-कूद आ! मगर देख समय से नहीं लौटेगा तो मैं तेरी बड़ी कुटम्मस करूंगी।"

टॉम से इतनी खुश हो गई थीं मौसी कि उसे आलमारी के पास ले जाकर एक बढ़िया-सा सेब चुनकर उन्होंने दिया।

टॉम दांतों से सेब कुतरता घर से निकल पड़ा।

जेफ थैंकर के मकान के पास से गुजरते-गुजरते एकाएक टॉम रुक गया। बाग में एक नई लड़की खड़ी थी—अत्यधिक सुंदर, अत्यधिक सुकोमल। उसकी नीली आंखों, सुनहरे बालों की लंबी-लंबी चोटियों, सफेद फ्राक और बड़े सुंदर डिजाइनों से कढ़े हुए घाघरे ने मिल-जुलकर जैसे विमोहित कर लिया उसे। क्षण-भर में ही एमी लारेंस उसके हृदय की परतों में से निकलकर विस्मृति के कुहासे में खो गई। कभी वह सोचा करता था कि वह एमी को प्यार करता है। महीनों उसका मन जीतने के लिए उसने यत्न किए थे। अभी हफ्ते-भर पूर्व ही उसने स्वीकार किया था कि वह भी टॉम को प्यार करती है, और तब समझा था उसने कि वह दुनिया में सबसे ज्यादा खुशनसीब लड़का है। किन्तु अभी क्षण-भर में ही एमी ऐसे निकल गई उसके हृदय से, जैसे कोई अपरिचित हो वह।

वह इस नई लड़की को सराहना-भरी नजरों से देर तक एकटक देखता रहा, जब तक कि उसने टॉम को देख नहीं लिया। उसकी नजर पड़ते ही ऐसा करने की कोशिश करने लगा टॉम जैसे उसकी उपस्थिति की उसे कोई जानकारी ही न हो। उसकी प्रशंसा का पात्र बनने के प्रयत्न में तरह-तरह की बेवकूफी-भरी हरकतें करने लगा वह। तभी कनखियों से देखा उसने, वह लड़की धीरे-धीरे बढ़ रही थी घर की ओर। टॉम चहारदीवारी के पास जाकर, टेक लगाकर खड़ा हो गया और उदास नजरों से धीरे-धीरे उसके घर की ओर बढ़ते हुए कदमों को देखता रहा। वह उम्मीद कर रहा था

कि वह लड़की कुछ देर और रुक जाएगी। किन्तु वह बढ़ती गई, बढ़ती गई। क्षण-भर के लिए वह सीढ़ियों पर रुकी और दरवाज़े की ओर बढ़ने लगी। उसके ड्योढ़ी पर पांव रखते ही टॉम के मुंह से एक लम्बी सांस निकल गई। लेकिन तभी एकाएक सिर घुमाकर उसने टॉम को एक नज़र देखा, और टॉम के चेहरे पर उल्लास की रेखाएं उभर आईं।

खाने के समय टॉम इतना खुश नज़र आ रहा था कि मौसी भी सोचने लगीं कि आज इस लड़के को आखिर हो क्या गया है। सिड को मुंह चिढ़ाने के लिए उसे डांट भी पड़ी, किन्तु उसपर कोई असर न हुआ। मौसी की आंखों में धूल झोंककर चीनी चुराने की कोशिश में उंगलियों पर मार भी खानी पड़ी, किन्तु फिर भी उल्लास में कोई कमी न हुई।

रात में साढ़े नौ-दस के करीब टॉम फिर उस पार्क का चक्कर काटने गया जहां वह अपरिचित सुंदरी रहती थी। वह फिर से खिड़की के नीचे जा लेटा। कल्पना करने लगा वह कि इसी तरह लेटा-लेटा मृत्यु की गहरी नींद सो जाएगा और सुबह उठकर वह उसे इस तरह पड़ा देखेगी। किन्तु क्या उसके निर्जीव शरीर पर उसकी आंखों से एक बूंद आंसू भी ढुलक सकेगा? क्या उसे इस तरह मृत देखकर उसके मन में आहों का एक भी उफान आ सकेगा?

किन्तु तभी खिड़की खुली और एक नौकरानी ने ढेर-सा पानी एक झोंके से बाहर फेंक दिया। शहीद बेचारे का सारा शरीर तरबतर हो गया। वह एक झटके से उठ खड़ा हुआ और अंधकार में गायब हो गया।…

३



टॉम, उसकी बहन मेरी और सिड संडे-स्कूल की तरफ चले, तो टॉम के चेहरे पर उदासी छाई हुई थी। संडे-स्कूल से उसे बड़ी घृणा थी, किन्तु हर रविवार को उसे वहां जाने के लिए मजबूर किया जाता था। हां, सिड और मेरी को जरूर संडे-स्कूल जाने में बड़ी खुशी होती थी।

स्कूल पहुंचकर टॉम दरवाजे पर ही रुक गया। मेरी सिड को साथ लिए हुए अंदर चली गई।

टॉम ने बढ़िया-बढ़िया कपड़े पहने अपने एक साथी से पूछा, "कहो बिल, तुम्हारे पास पीला टिकट है क्या?"

"हां, है तो।"

"क्या लोगे उसके लिए?"

"यह बताओ कि तुम दोगे क्या?"

"मुलेठी का एक टुकड़ा और मछली फंसाने का एक कांटा।"

"पहले दिखाओ, तो बताऊं!"

टॉम ने अपना माल दिखा दिया। दोनों ही चीजें संतोष-

जनक थीं, इसलिए माल की अदला-बदली हो गई। इसके बाद उसने सफेद पत्थरों के बदले तीन लाल टिकट खरीदे और कुछ अन्य छोटी चीजों के बदले नीले टिकट लिए। पंद्रह मिनट तक वह टिकटें खरीदता खड़ा रहा। फिर वह चर्च के भीतर घुसा। अपनी सीट पर पहुंचकर जो पहला लड़का नज़र आया उससे झगड़ा शुरू कर दिया उसने। तुरन्त ही एक प्रौढ़, गम्भीर अध्यापक ने बीच-बचाव करके झगड़ा शांत कराया। वे मुड़े ही थे कि अगली बेंच पर बैठे एक लड़के के बाल खींच लिए टॉम ने। वह लड़का तेजी से मुड़ा, किन्तु इस समय तक टॉम अपनी नजरें पुस्तक के पन्नों पर गड़ा चुका था। उसके मुंह फेरते ही उसने एक अन्य लड़के के पिन चुभो दी और वह 'उफ्' करके रह गया, जिसके लिए अध्यापक की डांट भी खानी पड़ी उसे।

टॉम की पूरी क्लास अजीब गड़बड़झाला थी। बाइबल के पद सुनाने के लिए बच्चे बुलाए जाते, मगर किसीको एक पद भी याद न होता। अन्य लड़के फुस-फुसाकर पद की पंक्तियां बताते जाते और इस तरह लड़के पद पूरा सुना देते और इनाम में एक नीला टिकट प्राप्त कर लेर लेते। दस नीले टिकट के बराबर एक लाल टिकट माना जाता था और दस लाल टिकट एक पीले टिकट के बराबर। दस पीले टिकटों के बदले में सुपरिंटेंडेंट एक सजिल्द बाइबल पुरस्कारस्वरूप देते थे, जिसका मूल्य उस समय भी चालीस सेंट होता था। मेरी अब तक दो बाइबल पुरस्कार में प्राप्त कर चुकी थी और एक जर्मन बालक तो चार-पांच बार यह पुरस्कार पा चुका था

बाइबल के पदों के पाठ के बाद मिस्टर वाल्टर्स का प्रवचन आरम्भ हुआ। उनके प्रवचन के बीच बराबर फुसफुसाहट होती रही। और उस समय तो फुसफुसाहट अपनी चरम सीमा पर पहुंच गई जब जेफ थैकर के साथ एक अधेड़ व्यक्ति ने चर्च में प्रवेश किया। उस व्यक्ति के साथ उसकी पत्नी और लड़की भी थी, जिसे देखकर टॉम के मन में गुदगुदी होने लगी। उत्फुल्लता भर उठी उसके मन-मस्तिष्क में और वह उस लड़की का ध्यान आकृष्ट करने के लिए तरह-तरह की विचित्र हरकतें करने लगा।

मिस्टर वाल्टर्स ने अपना भाषण समाप्त करने के बाद उन नवागंतुकों का परिचय दिया। वे थे न्यायाधीश थैकर, जो मिस्टर जेफ थैकर के ही भाई थे। वे बारह मील दूर कान्स्टॅन्टिनोपुल से वहां आए थे। यह सुनकर लोगों पर बड़ा प्रभाव पड़ा—ये सज्जन तो दुनिया घूमे हैं, बहुत कुछ देख-सुन चुके हैं।

मिस्टर वाल्टर्स बहुत प्रसन्न थे। कमी केवल यही रह गई थी कि बाइबल का पुरस्कार प्रदान करने का अवसर हाथ लगता नहीं दीख रहा था। वे अपने सबसे अच्छे शिष्यों के बीच घूम-घूमकर पूछ रहे थे। कुछ के पास दो पीले टिकट थे, किसीके पास चार। पूरे दस टिकट किसीके पास न थे।

मिस्टर वाल्टर्स की सारी आशा जाती रही, किन्तु तभी टॉम सायर उठ खड़ा हुआ। उसने नौ पीले टिकट, नौ लाल टिकट और दस नीले टिकट निकालकर सामने रख दिए और बाइबल का पुरस्कार मांगा। जैसे वज्र गिरा मिस्टर वाल्टर्स

पर। पिछले दस वर्षों से उन्होंने कभी भी ऐसी आशा नहीं की थी टॉम से। किन्तु अब तो कोई रास्ता नहीं था। टॉम के पास आवश्यक टिकट मौजूद थे। मजबूर होकर टॉम को मंच पर ले जाया गया, जहां न्यायाधीश थैकर तथा अन्य गण्यमान्य व्यक्ति बैठे थे। मंच पर से इस महान समाचार की घोषणा की गई। सारे स्कूल के लड़के ईर्ष्यापूर्ण दृष्टि से देख रहे थे टॉम को। और उन लोगों के मन में तो और कांटे चुभ रहे थे, जिन्होंने टॉम को उन वस्तुओं के बदले अपने टिकट दिए थे, जिन्हें उसने पुताई करने के बदले गांव के लड़कों से वसूला था। अपने को कोसकर रह गए वे सब।

टॉम को पूरी शान से पुरस्कार प्रदान किया गया। फिर न्यायाधीश महोदय से उसका परिचय कराया गया। किन्तु टॉम की जबान जैसे तालू में चिपक गई थी, उसका दिल जोर-जोर से धड़क रहा था—एक तो इसलिए कि वह एक महान व्यक्ति के सामने खड़ा था, दूसरे इसलिए भी कि वे उसी अपरिचित लड़की के पिता थे। न्यायाधीश महोदय ने उसके सर पर हाथ फेरकर उसकी प्रशंसा में कुछ शब्द कहे और फिर उसका नाम पूछा। किन्तु टॉम की जबान लड़खड़ा गई। किसी तरह बोला वह, "टॉम।"

"नहीं, नहीं, तुम्हारा नाम है टामस।"

"टामस!"

"हां, ठीक कहा। मगर इसके आगे भी तो कुछ होगा? अपना पूरा नाम बताओ बेटे!"

"अपना पूरा नाम बताओ टामस," मिस्टर वाल्टर्स ने

कहा, "और श्रीमान कहकर बात करो।"

"टॉम सायर, श्रीमान !"

"ठीक, बिलकुल ठीक। बड़े अच्छे लड़के हो तुम !"

न्यायाधीश महोदय ने फिर टॉम की तारीफ में बहुत कुछ कहा और एक-दो प्रश्न पूछे, मगर टॉम किसीका भी संतोषजनक उत्तर न दे सका।

उधर मिस्टर वाल्टर्स का दिल अलग धुक-धुक कर रहा था, क्योंकि वे जानते थे कि टॉम के लिए सरल से सरल प्रश्न का भी उत्तर देना कठिन है। साथ ही वे खीझ भी रहे थे कि न्यायाधीश महोदय क्यों बार-बार टॉम से प्रश्न करते जा रहे हैं।



८

सोमवार की सुबह टॉम को हमेशा बड़ी संकटमय प्रतीत होती थी, क्योंकि उस दिन से फिर स्कूल आने-जाने का झंझट लग जाता था। उस दिन भी वैसी ही संकटमय लगी सुबह। टॉम ने बीमारी का बहाना बनाकर स्कूल जाने से जान छुड़ाने की कोशिश की। इस प्रयत्न में सफलता नहीं मिली तो उसने दांत के दर्द का बहाना किया। फलस्वरूप मौसी ने उसका एक दांत ही उखाड़ दिया। उसने बहुत मना किया, बार-बार कहा कि उसके दांत में दर्द-वर्द नहीं है, कि वह बहाना बना रहा था, लेकिन मौसी थीं कि उन्होंने उसकी एक नहीं सुनी।

दांत की उस पूंजी को लेकर वह गांव के बच्चों को उसे दिखाता हुआ स्कूल की ओर चल पड़ा। ऊपर की दंत-पंक्ति में इस तरह बन गए रिक्त स्थान के कारण वह जैसे नुमाइश की चीज बन गया। सभी बच्चे बड़ी दिलचस्पी से उसके खोड़हे दांतों को देखते और ईर्ष्या से जल उठते।

घूमते-घूमते टॉम हकिलबरी फिन के पास जा पहुंचा, जो एक भयानक शराबी का बेटा था और गांव की हर मां को

घृणा का पात्र था। किन्तु गांव के सारे बच्चों के लिए उसका जीवन, उसका रहन-सहन एक आदर्श था। हर समय मुक्त भाव से पूर्ण स्वतंत्रतापूर्वक उसके घूमने-फिरने तथा अपनी इच्छा के अनुसार कुछ भी कर सकने के कारण बच्चों को उससे ईर्ष्या भी होती थी। टॉम को सख्त हिदायत थी कि वह हकिलबरी से दूर रहा करे। इसलिए मौका पाने पर वह हकिलबरी के साथ जरूर खेलता था। उससे टॉम की गहरी दोस्ती थी।

देर तक एक मरी हुई बिल्ली को लेकर बातचीत करने के बाद दोनों ने रात के समय एक-दूसरे से मिलने का वादा किया और टॉम स्कूल की ओर चल पड़ा।

स्कूल के अहाते में पहुंचकर टॉम तेजी से चलने लगा, ताकि यह न मालूम हो कि वह बीच-बीच में रुकता हुआ मस्ती से स्कूल आया है। क्लास लग चुकी थी, इसलिए क्लास में घुसकर अपना हैट एक खूंटी पर टांगकर वह अपनी सीट पर चुपचाप जा बैठा। मास्टर साहब अपने ऊंचे आसन पर बैठे ऊंघ रहे थे और बच्चे अपनी पुस्तकें पढ़ रहे थे। टॉम के क्लास में घुसते ही मास्टर साहब जाग पड़े। बोले, "टामस सायर!"

टॉम जानता था कि उसके पूरे नाम की पुकार संकट की पूर्व सूचना है।

"जी, मास्टर साहब!"

"यहां आओ! हां, अब बताओ, हमेशा की तरह तुम आज फिर देर से क्यों आए?"

टॉम झूठ का सहारा लेने की सोच ही रहा था कि उसकी


567
42
1134
2268

नज़र सुनहरे बालों की दो लहराती चोटियों पर पड़ गई, जिन्हें उसकी नज़रों ने बिजली की सी तेजी से पहचान लिया। लड़कियों की तरफ उसीकी बगल में एक सीट खाली बची थी। सब कुछ देखा टॉम ने और जैसे उसके मुंह से अपने-आप ही निकल गया, "मैं हकिलबरी फिन से बातें करने के लिए रुक गया था मास्टर साहब!"

मास्टर साहब के हृदय की धड़कन ही बंद हो गई जैसे क्षण-भर को। असहाय दृष्टि से देखने लगे वे टॉम को। सारी क्लास आश्चर्य में पड़ गई कि कहीं इस मूर्ख लड़के का दिमाग तो नहीं फिर गया है।

मास्टर साहब ने पूछा, "क्या करने गए थे तुम?"

"हकिलबरी फिन से बातें करने के लिए रुक गया था।" फिर अपनी बात दुहरा दी टॉम ने।

मास्टर साहब टॉम की जैकेट उतरवाकर तब तक बेंतें लगाते रहे जब तक थक नहीं गए। फिर उन्होंने आदेश दिया, "जाओ लड़कियों के बीच बैठो! तुम्हें अब आगे के लिए सावधान हो जाना चाहिए।"

टॉम उसी लड़की की बगल में जा बैठा। वह लड़की अपना सर झटककर ज़रा-सा खिसक गई।

थोड़ी ही देर में सारी क्लास पढ़ाई में लग गई और टॉम की तरफ किसीका ध्यान भी नहीं रह गया। टॉम अब कनखियों से रह-रहकर उस लड़की को देखने लगा। लड़की ने यह देखा तो मुंह चिढ़ाकर दूसरी तरफ मुंह फेर लिया। इस बार उसने सर घुमाया तो उसके सामने एक आड़ू रखा हुआ था। उसने

उसे टॉम की तरफ खिसका दिया। टॉम ने तुरन्त ही उसे फिर उसकी तरफ कर दिया। लड़की ने इस बार भी आड़ू खिसका दिया, किन्तु इस बार उसकी हरकत में उतनी कठोरता नहीं थी। टॉम ने तुरंत फिर उसे उसीके सामने डाल दिया। इस बार उसने उसे वहीं का वहीं पड़ा रहने दिया। टॉम ने अपनी स्लेट पर लिख दिया, "इसे ले लो न, मेरे पास और है।" लड़की ने उसके लिखे शब्दों को पढ़ तो लिया, किन्तु जरा भी हिली-डुली तक नहीं। अब टॉम बायें हाथ से अपनी स्लेट छिपाकर उसपर कुछ बनाने लगा। क्षण-भर तो उस लड़की ने उसकी तरफ ध्यान ही नहीं दिया, किन्तु फिर उसकी उत्सुकता जाग उठी और वह टॉम की स्लेट देखने की कोशिश करने लगी। टॉम बिना ध्यान दिए अपने काम में लगा रहा। अंत में लड़की को हार माननी ही पड़ी। संकोचपूर्ण स्वर में उसने फुसफुसाकर कहा, "मुझे भी देखने दो न!"

टॉम ने अपना हाथ हटाकर एक मकान की तस्वीर दिखा दी। लड़की की दिलचस्पी उस तस्वीर में धीरे-धीरे बढ़ने लगी और वह सब कुछ भूल गई। क्षण-भर उसे देखकर बोली, "बहुत अच्छी बनी है यह तो—एक आदमी भी बना डालो न!"

कलाकार ने मकान के सामने एक आदमी भी खड़ा कर दिया, जो दानव जैसा लगता था। किन्तु उस लड़की को इतने से ही संतोष हो गया। बोली, "कैसा सुन्दर मनुष्य बना है! अब मुझे आती हुई बनाओ!"

टॉम ने जैसे-तैसे एक नारी-आकृति भी बना डाली और उसकी फैली हुई उंगलियों में एक पंखा भी पकड़ा दिया।

लड़की बोली, "वाह, कितनी अच्छी तस्वीर बनाई है तुमने ! काश, मैं भी ऐसी तस्वीर बना सकती !"

"यह तो बहुत आसान है," टॉम फुसफुसाया, "मैं तुम्हें सिखा दूंगा।"

"सच, सिखा दोगे ? कब ?"

"दोपहर में ! तुम खाना खाने घर जाती हो ?"

"अगर तुम रुको तो मैं भी रुकी रहूंगी।"

"बहुत अच्छा, यही ठीक रहा !...सुनो, तुम्हारा नाम क्या है ?"

"बेकी थैचर, और तुम्हारा ?...अरे, तुम्हारा नाम तो मैं जानती हूं। टॉम सायर है तुम्हारा नाम ?"

"इस नाम से तो मुझे तब पुकारा जाता है जब मार पड़नी होती है। जब मैं भले लड़कों की तरह काम करता हूं तो मुझे टॉम कहा जाता है। तुम भी मुझे टॉम ही कहा करो, कहोगी न ?"

"हां !"

अब टॉम अपनी स्लेट पर फिर कुछ लिखने लगा। इन शब्दों को वह उस लड़की से छिपाए हुए था। लेकिन इस बार तो उसके पीछे रहने का कोई सवाल ही नहीं था। वह स्लेट पर लिखे शब्दों को दिखाने के लिए टॉम की खुशामद करने लगी और टॉम 'नहीं-नहीं' करने लगा।

अन्त में टॉम ने कहा, "तुम किसीसे कहोगी तो नहीं ? बोलो, जब तक जिंदा रहोगी, किसीसे नहीं कहोगी ?"

"नहीं, मैं किसीसे कभी न कहूंगी। अब तो दिखा दो !"

"नहीं, तुम देखना पसन्द न करोगी।"

अब तो बेकी ने स्लेट देखने के लिए हाथापाई भी शुरू कर दी। टॉम धीरे-धीरे एक-एक शब्द पर से हाथ हटाता गया और बेकी की आंखों के सामने चमक उठा—"मैं तुम्हें प्यार करता हूं।"

"बड़े शैतान हो तुम!" और उसने टॉम के हाथ पर हल्की-सी चपत लगा दी।

किन्तु उसका चेहरा रक्ताभ हो उठा और उत्फुल्ल रेखाएं उभर आईं उसके मुखमंडल पर। तभी टॉम को लगा जैसे उसका कान पकड़कर उसे उठाया जा रहा है। मास्टर साहब ने उसे कान पकड़े हुए ही ले जाकर उसकी पहले वाली सीट पर बैठा दिया और फिर अपनी कुर्सी की तरफ चले गए।

क्लास का शोर-गुल शांत होने पर टॉम ने पुस्तक में ध्यान लगाने की कोशिश की, किन्तु व्यर्थ!

किसी तरह क्लास खत्म हुई तो टॉम ने अन्य लड़के-लड़कियों से पीछा छुड़ाया और बेकी के पास जा बैठा। टॉम जैसे हवा में उड़-सा रहा था। उसने पूछा, "तुम्हें चूहे पसंद हैं?"

"नहीं, मुझे चूहों से घृणा है।"

"मुझे भी जीवित चूहों से। लेकिन मेरा मतलब मरे हुए चूहों को डोरे से बांधकर नचाने से था।"

"नहीं, मुझे चूहे बिलकुल पसन्द नहीं। मुझे तो च्विंगम पसंद है।"

"मुझे भी बहुत पसंद है। काश, इस समय मेरे पास

होता !"

"मेरे पास है। मैं तुम्हें उसे चूसने दूंगी, मगर थोड़ी देर में मुझे वापस कर देना।"

बात तय हो गई और दोनों बारी-बारी से च्विंगम चूसते रहे।

"तुम कभी सरकस देखने गई हो बेकी ?" टॉम ने पूछा।

"हां, और मेरे पापा मुझे फिर ले जाने वाले हैं।"

"मैंने भी तीन-चार बार सरकस देखा है।…मैं तो बड़ा होने पर सरकस का जोकर बनूंगा।"

"सच, तब तो बड़ा मज़ा आएगा।"

"हां बेकी ! अब उन लोगों को पैसे भी खूब मिलते हैं—एक डालर प्रतिदिन।…एक बात बताओ बेकी, तुम्हारी कभी सगाई हुई है ?

"यह क्या होता है ?"

"अरे, वही शादी के लिए सगाई !"

"नहीं, मेरी तो नहीं हुई।"

"करोगी ?"

"मैं तो जानती नहीं सगाई कैसी होती है।"

"अरे, इसमें क्या रखा है ! लड़की लड़के से कहती है कि वह सिवा उसके और किसीसे कभी शादी नहीं करेगी।"

"सभी ऐसा करते हैं ?"

"हां, जो एक-दूसरे को प्यार करते हैं। तुम्हें याद है बेकी, मैंने स्लेट पर क्या लिखा था ?"

"हां, हां !"

"बताओ, क्या लिखा था ?"

"मैं नहीं बताऊंगी।"

"तो मैं बताऊं ?"

"हां, हां, लेकिन आज नहीं, फिर कभी।"

"नहीं, अभी।"

"अभी नहीं, कल।"

"नहीं बेकी, नहीं ! मान भी जाओ न ! बस मैं तुम्हारे कान में धीरे से कहूंगा।"

बेकी चुपचाप सकुचाती बैठी रही। टॉम ने चुप्पी को स्वीकृति मानकर उसकी कमर में अपना हाथ डाल दिया और उसके कान के बहुत निकट मुंह ले जाकर बोला, "मैं तुम्हें प्यार करता हूं बेकी !" फिर उसने कहा, "अब तुम भी इसी तरह कहो बेकी !"

पहले तो उसने इनकार किया, किन्तु फिर बोली, "अच्छा, तुम अपना मुंह फेर लो, ताकि मुझे देख न सको तो मैं कहूंगी। लेकिन देखो टॉम, किसीसे कहना नहीं। नहीं कहोगे न ?"

"हां, हां, कभी नहीं कहूंगा बेकी !"

और उसने अपना मुंह दूसरी तरफ कर लिया। बेकी ने सांस रोककर किसी तरह कहा, "मैं···तुम्हें···प्यार···करती··· हूं !" और फिर उछलकर भागने लगी। टॉम उसके पीछे-पीछे डेस्कों के चारों तरफ दौड़ता रहा।

अंत में बेकी एक कोने में जा खड़ी हुई। उसने अपनी सफेद फ्राक उठाकर अपना मुंह छिपा लिया। टॉम ने उसके

कंधों को पकड़कर कहा, "अब ठीक हुआ। बस, हो गया बेकी ! अब इसके बाद तुम मेरे सिवा और किसीको प्यार नहीं करोगी और न मेरे सिवा और किसीसे शादी करोगी।"

"नहीं टॉम, मैं तुम्हारे अलावा और किसीको कभी प्यार नहीं करूंगी और तुम भी मुझे छोड़ किसी और से विवाह न करना।"

"बिलकुल ठीक, बिलकुल ठीक ! और हां, स्कूल जाते-आते समय अब तुम हमेशा मेरे ही साथ रहना बेकी !"

"यह तो बड़ा अच्छा काम है टॉम। मैंने तो ऐसी मजेदार चीज कभी सुनी ही न थी।"

"इसमें बड़ा मजा आता है बेकी। देखो न, मैं और एमी लारेंस जब···"

किन्तु दूसरे ही क्षण टॉम को अपनी भूल का आभास मिल गया। बड़ी उलझन में पड़ गया वह।

बेकी रुआंसे स्वर में बोली, "तो टॉम, मैं पहली ही लड़की नहीं हूं जिससे तुमने सगाई की है ?"

और बेकी बुरी तरह रोने लगी। टॉम ने उसे बहुत समझाने की कोशिश की, बहुत कहा कि उसका एमी लारेंस से कोई सम्बन्ध नहीं है, कि वह बेकी के अलावा और किसीको नहीं चाहता; किन्तु बेकी पर कोई असर नहीं हुआ। हर क्षण उसकी सिसकियां बढ़ती ही जा रही थीं। टॉम ने उसे अपनी सबसे बहुमूल्य वस्तु पीतल का मुट्ठा भी देने की कोशिश की, किन्तु बेकी ने हाथ मारकर उसे गिरा दिया।

टॉम चुपचाप कमरे से बाहर निकल गया।

की ओर चल पड़ा। अब बेकी के मन में शंका उत्पन्न होने लगी। वह दौड़कर दरवाज़े पर गई। टॉम कहीं नज़र नहीं आ रहा था। वह खेल के मैदान पर भी गई, किन्तु टॉम वहां भी न था। हैरान-सी चीख उठी वह, "टॉम, लौट आओ टॉम!"

वह ध्यान से कान लगाकर सुनती रही, किन्तु कोई उत्तर न मिला। बैठकर हाथों में मुंह छिपाकर ज़ोर-ज़ोर से रो पड़ी वह।



५

दिन-भर टॉम हैरान-परेशान घूमता रहा, मगर उसे कहीं चैन नहीं मिला। रात में जब वह सिड के साथ हमेशा की तरह सोने के लिए बिस्तर पर गया, उस समय भी उसका मन विकल था।

किन्तु अपने वादे के अनुसार हकिलबरी अपनी मरी हुई-सी बिल्ली लेकर आ पहुंचा और उसकी 'म्याऊं-म्याऊं' सुनते ही टॉम चुपके-चुपके घर से भाग निकला।

थोड़ी ही देर में वे दोनों कब्रिस्तात जा पहुंचे। वे कब्रिस्तान में स्थान-स्थान पर घास-फूस के बीच चल रहे थे। वे दोनों बातें बिलकुल नहीं कर रहे थे, और अगर बीच-बीच में वे बोलते भी थे तो फुसफुसाहट से भी हल्के स्वर में। अंधकार और सन्नाटे ने जैसे दबोच लिया था उनके मन-मस्तिष्क को और वे अंदर ही अंदर भय से कांप रहे थे।

एक स्थान पर वे दोनों बैठ गए। मृत आत्माओं के आगमन का इन्तजार करते बैठे रहे वे थोड़ी देर। फिर टॉम ने ही बातों का सिलसिला शुरू किया। मृत आत्माएं उनके

मस्तिष्क पर इस तरह छाई हुई थीं कि बातें भी उन्हींके संबंध में छिड़ीं।

एकाएक टॉम ने हकिलबरी की बांह जोर से दबाकर कहा, "वह सुनो, सुन रहे हो न ?"

"यह कैसी आवाज है टॉम !" और वे दोनों चिपट गए एक-दूसरे से, सांस खींचे हुए।

"वह देखो, फिर आवाज हुई ! सुना नहीं तुमने ?"

"मैंने..."

"सुनो, सुनो, फिर वही आवाज हो रही है !"

"हे ईश्वर !...टॉम, आवाजें तो इधर ही आ रही हैं ? अब हम लोग क्या करें ?"

"डरो मत हकिल, मेरे ख्याल से तो मृत आत्माएं हमारी ओर ध्यान भी नहीं देंगी। हम लोग उनका कोई नुकसान तो कर नहीं रहे हैं। अगर हम लोग बिलकुल स्थिर पड़े रहे, तो वे हमारी तरफ ज़रा भी ध्यान नहीं देंगी।"

"मैं कोशिश करूंगा। मगर टॉम, मेरा तो सारा शरीर कांपा जा रहा है !"

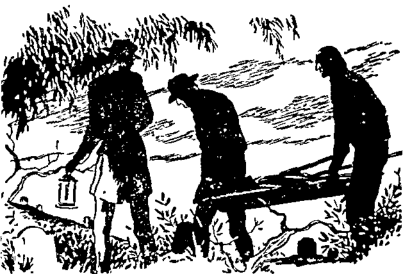
"सुनो, सुनो !"

और वे दोनों सांस रोककर सुनने लगे।

"वह देखो !" टॉम फुसफुसाया, "क्या है वह ?"

"भूतों द्वारा जलाई गई आग है। और टॉम, मुझे तो बहुत डर लग रहा है।"

कुछ अस्पष्ट-सी आकृतियां अंधकार का पर्दा चीरकर उनकी आंखों के सामने आ गईं। उनमें से एक के हाथ में



पुराने जमाने की सी लालटेन थी, जिसे वह बुरी तरह हिलाता चल रहा था। लालटेन पर पड़ रहे हर झटके के साथ छोटी-बड़ी लौ जैसे नाच-नाच जाती थी।

"निश्चित रूप से ये भूत हैं टॉम ! और तीन-तीन भूत एकसाथ हो आ गए हैं। अब तो हम लोग गए। यार टॉम, तुम्हें ईश्वर की कोई प्रार्थना याद है ?"

"अच्छा, मैं प्रार्थना करने की कोशिश करता हूं, लेकिन तुम इस तरह डरो नहीं ! मृत आत्माएं हमें कोई नुकसान नहीं पहुंचाएंगी...।"

"अरे...रे-रे !"

"क्या बात है हकिल ?"

"ये तो भूत नहीं, मनुष्य हैं टॉम ! कम से कम इनमें से एक तो जरूर ही मनुष्य है। जानते हो, इनमें से एक आवाज अपने मफ पॉटर की है।"

"सच ?"

"हां, हां, मैं दावे से कह सकता हूं। ज्यादा हिलो-डुलो नहीं, वह हम लोगों को देख नहीं पाएगा। हमेशा की तरह इस समय भी नशे में बुत है वह।"

"अच्छी बात है, मैं शांत पड़ा रहता हूं।...अरे हकिल, मैं इनमें से एक और को पहचानता हूं। हां, हां, यह इंजुन जोय की ही तो आवाज है।"

"अच्छा, वह हत्यारा ! मगर यहां किसलिए आए हैं ये लोग ?"

धीरे-धीरे फुसफुसाहट भी बन्द हो गई, क्योंकि वे तीनों उस कब्र के निकट पहुंच गए थे, जहां टॉम और हकिलबरी छिपे हुए थे।

"यह रही वह कब्र !" तीसरी आवाज ने कहा। और फिर बोलनेवाले ने लालटेन ऊपर उठा दी, जिसकी मद्धिम रोशनी में नौजवान डाक्टर राबिन्सन का चेहरा चमक उठा।

पॉटर और इंजुन जोय एक ठेला लिए हुए थे, जिसपर उन्होंने रस्सी और दो फावड़े रख छोड़े थे। सारा सामान जमीन पर पटककर उन दोनों ने कब्र को खोदना शुरू कर दिया। डाक्टर ने कब्र के सिरहाने लालटेन रख दी और एक वृक्ष की टेक लगाकर बैठ गया। वह इतना निकट आ गया था उन लड़कों के कि वे उसे बड़ी आसानी से छू सकते थे।

"फुर्ती से काम करो भाई तुम लोग !" बहुत धीमे स्वर में कहा उसने, "चांद किसी भी क्षण निकल सकता है अब !"

गुर्रा पड़े वे दोनों, पर कब्र की खुदाई में जुटे रहे। फावड़ा चलने के सिवाय और किसी तरह की कोई आवाज़ नहीं हो रही थी उस समय। अन्त में फावड़ा ताबूत से टकराया और दूसरे ही क्षण उन दोनों ने उसे निकालकर बाहर रख दिया। फावड़े से ही ताबूत का ढक्कन खोलकर उन दोनों ने लाश को बाहर निकाला और उसे ज़मीन पर पटक दिया। ठेला बिलकुल तैयार था और उसपर लाश को रख उसपर कम्बल डाल दिया उन दोनों ने और फिर लाश को अच्छी तरह रस्सी से ठेले से बांध दिया। पॉटर ने अपनी जेब से चाकू निकालकर ठेले से लटक रही रस्सी को काट दिया और फिर डाक्टर की ओर मुड़कर बोला, "लो, यह जहन्नुमी चीज़ तैयार है। अब पांच डालर और निकालो, वरना इसे हम लोग यहीं छोड़कर चले !"

"यह ठीक कहा तुमने !" इंजुन जोय ने भी हां में हां मिलाई।

"यह क्या बात है ?" डाक्टर ने गुस्से से कहा, "तुम लोगों ने तो अपनी मज़दूरी पहले ही मांग ली थी और मैंने दे भी दी थी।"

"नहीं जी, तुमने तो इससे भी ज्यादा कुछ किया है मेरे साथ।" गुर्राकर बोला इंजुन जोय और थोड़ी दूर खड़े डाक्टर की ओर बढ़ने लगा। वह कहता जा रहा था, "पांच साल पहले जब मैं कुछ खाने के लिए मांगने गया था, तो तुमने मुझे

अपने बाप की रसोई में से धक्के देकर बाहर निकाल दिया था। और उस समय जब मैंने कसम खाई थी कि चाहे सौ बरस लग जाएं, मगर मैं तुमसे इस अपमान का बदला लेकर रहूंगा, तो तुम्हारे बाप ने मुझे आवारा बताकर जेल भिजवा दिया था। क्या तुम समझते हो, मैं यह भूल गया हूं ? क्या तुम समझते हो कि इंजुन की नसों में खून नहीं पानी बह रहा है ? आज बड़े मौक़े से मिले हो तुम। तुमसे निपटारा करने का अच्छा मौका है मेरे लिए !"

घूंसा तानकर धमकियां दे रहा था वह डाक्टर को। तभी डाक्टर ने एकाएक हमला कर दिया उसपर और उस गुण्डे को ज़मीन पर गिरा दिया। पॉटर अपने हाथ से चाकू गिराकर बोला, "मेरे साथी से मार-पीट न करो हज़रत, वरना···

और दूसरे ही क्षण वह डाक्टर से गुंथ गया। बुरी तरह लड़ रहे थे वे दोनों। घास-फूस पर लोट रहे थे वे। कभी डाक्टर ऊपर हो जाता, कभी पॉटर। इंजुन जोय अब तक उठ खड़ा हुआ था। उसकी आंखों में खून उतर आया था। झुककर पॉटर का चाकू उठा लिया उसने और डाक्टर की तरफ बहुत धीरे-धीरे दबे पांव बढ़ने लगा।

एकाएक डाक्टर ने अपने-आपको छुड़ा लिया। लपककर उसने विलियम की कब्र के हेडबोर्ड को उठा लिया और पॉटर के सर पर दे मारा। पॉटर ज़मीन पर गिर पड़ा। तभी इंजुन जोय ने लपककर डाक्टर पर हमला बोल दिया और चाकू डाक्टर के सीने के पार हो गया। डाक्टर पॉटर के ऊपर लुढ़क गया। पॉटर का शरीर खून से लथपथ हो गया। चांद ने अपनी

आंखों पर बादलों का झीना आवरण डाल लिया और टॉम तथा हकिलबरी अंधकार में भी जान छोड़कर भाग खड़े हुए।

बादलों का आवरण जब चांद पर से हटा, उस समय इंजुन जोय विचारों में डूबा खड़ा हुआ था। डाक्टर के शरीर में एक-दो बार हरकत हुई और फिर निर्जीव हो गया वह। इंजुन बड़बड़ाया, "इससे तो हिसाब चुकता हो गया।"

उसने डाक्टर की सारी जेबों की तलाशी ली और जो कुछ मिला, हथिया लिया। फिर चाकू डाक्टर के सीने से निकालकर पॉटर के खुले हुए दाहिने हाथ में पकड़ा दिया।

कई मिनट बीत गए इसी तरह। पॉटर के शरीर में हरकत होने लगी थी और अब वह कराहने लगा था। उसकी मुट्ठी कस गई चाकू पर। ऊपर उठकर उसने उसे देखा और भय से कांपकर दूसरे ही क्षण छोड़ दिया चाकू को। तेज़ी से उठ बैठा वह और डाक्टर की लाश को ढकेल दिया एक तरफ। भय और आश्चर्य से ताक रहा था वह डाक्टर की लाश को। तभी उसकी नज़रें इंजुन जोय की नज़रों से मिलीं।

"यह सब क्या है जोय ?" पूछा उसने।

"बहुत गन्दी बात है यह पॉटर !" उसी तरह बैठे-बैठे कहा जोय ने, "आखिर तुमने ऐसा किया क्यों ?"

"मैंने ! नहीं, नहीं, मैंने तो कुछ भी नहीं किया !"

"देखो पॉटर, इस तरह बातें बनाकर बच नहीं सकोगे तुम !"

पॉटर कांप उठा और उसका चेहरा सफेद पड़ गया। वह बोला, "मैंने समझा था कि शराब पीकर मेरी बुद्धि नष्ट नहीं

होगी, मगर हुआ वही जो होना था। मैंने आज रात जाने क्यों शराव पी ली थी।...मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है। कुछ भी याद नहीं है मुझे। सच-सच वताओ जोय, क्या यह भयानक काम मेरे ही हाथों हुआ है? मगर मैं ऐसा करना नहीं चाहता था। वताओ न जोय, ऐसा हो कैसे गया? ओह! कितनी कम उम्र थी अभी इसकी!"

"तुम दोनों एक-दूसरे से गुंथे हुए थे। एकाएक इसने यह हेडवोर्ड उठाकर तुम्हारे सिर पर दे मारा और तुम जमीन पर गिर पड़े। थोड़ी देर में तुम फिर उठ वैठे और फिर उससे गुंथ गए। एकाएक चाकू आ गया तुम्हारे हाथ में और तुमने इसके सीने के पार कर दिया।"

"ओह, मुझे होश ही नहीं था कि मैं क्या कर रहा हूं! अगर मुझसे यह गंदा काम हुआ है तो इसी कारण मैं मर जाऊं!" और वह अपने को कोसता रहा। उसे पूरी तरह विश्वास हो गया कि डाक्टर की हत्या उसीके हाथों हुई थी और वह इंजुन जोय को मिन्नत-खुशामद करने लगा कि वह इस संवंध में किसीसे कभी कुछ न कहे। इंजुन ने कह भी दिया कि वह पॉटर को धोखा नहीं देगा, कि वह कभी किसी-से कुछ नहीं कहेगा।

टॉम और हकिलवरी भागते गए, भागते गए पूरी शक्ति से, जव तक गांव नहीं आ गया। फिर उन दोनों ने सोचा कि अगर डाक्टर राविन्सन की मृत्यु हो गई तो इंजुन को निश्चय ही फांसी हो जाएगी। किन्तु समस्या यह थी कि रहस्य का भण्डाफोड़ कौन करेगा? क्या वे ही दोनों? लेकिन हकिल ने

कहा कि अगर कुछ गड़बड़ी हो गई और इंजुन छूट गया तो वह उन दोनों को कभी जीवित नहीं छोड़ेगा। और यही डर टॉम को भी था। सो दोनों ने प्रतिज्ञा की, मौखिक ही नहीं रक्तलिखित भी, कि वे कभी इस घटना के संबंध में किसीसे एक शब्द भी नहीं कहेंगे।

दूसरे दिन दोपहर होते-होते गांव-भर में उस हत्या की खबर विद्युत् की सी तेजी से फैल गई। थोड़ी ही देर में घटना-स्थल पर भीड़ लग गई। सभी डाक्टर राबिन्सन की मृत्यु पर दुःख प्रकट कर रहे थे। टॉम और हकिलबरी भी वहां मौजूद थे। एकाएक उनकी दृष्टि इंजुन जोय पर पड़ी और सिर से पैर तक उनका शरीर कांप उठा।

मामले की जांच करने के लिए शेरिफ भी आए हुए थे। एकाएक पॉटर आता दिखाई दिया और भीड़ चिल्ला उठी, "यही है, यही है!"

पॉटर ने उल्टे पांव भागने की कोशिश की, किन्तु वह भाग नहीं सका। शेरिफ ने उसे पकड़ ही लिया। पॉटर फफक-फफककर रोने लगा। सिसकियों के बीच उसने कहा, "यह भयंकर काम मैंने नहीं किया दोस्तो, मैंने नहीं किया। मैं कसम खाकर कहता हूं, मैंने यह काम नहीं किया।"

"मगर तुमपर दोष लगाया ही किसने है!" एक व्यक्ति ने चिल्लाकर कहा।

बड़ी दयनीय दृष्टि से नजरें उठाकर देखा पॉटर ने—यह बात इंजुन जोय ने कही थी। जैसे अपने-आप ही निकल गया उसके मुंह से, "तुमने तो वादा किया था जोय कि तुम कभी

किसीसे…"

"क्या यह तुम्हारा ही चाकू है ?" और शेरिफ ने उसकी तरफ चाकू बढ़ा दिया।

अगर इन लोगों ने उसे पकड़कर जमीन पर बैठा न दिया होता, तो शायद पॉटर गिर पड़ता। वह कहने लगा, "मेरे मन में जाने किसने कहा कि अगर मैं यहां आकर…" और वह कांप उठा, अपनी बात भी पूरी नहीं कर सका। अपने अशक्त हाथ को अजीब ढंग से हिलाकर बोल उठा वह, "बता दो जोय, बता दो इन लोगों को सब कुछ !…अब इन बातों से कोई फायदा नहीं।"

टॉम और हकिलबरी को तो जैसे काठ मार गया।

इंजुन ने अपने ढंग से रात की घटना को बयान कर दिया, जिसके अनुसार पॉटर ही डाक्टर राबिन्सन की हत्या का दोषी था। इसके बाद शपथ दिलाकर उससे एक बार फिर बयान लिया गया।

६



कब्रिस्तान की वह घटना टॉम के मस्तिष्क पर बुरी तरह छा गई; और हत्या के अपराध में पॉटर के फंस जाने से तो और भी बोखला गया था वह। बार-बार इच्छा होती थी कि उसकी उस हत्या का भेद किसीसे न कहने की प्रतिज्ञा को तोड़ दे, किन्तु इंजुन जोय का भय उसे ऐसा करने से रोके हुए था।

इन बातों से इतना उत्तेजित हो उठा था उसका मस्तिष्क कि रात में नींद भी नहीं आती थी उसे, और आती भी थी तो स्वप्न में भी वही घटना उसे दिखती थी और नींद में ही जाने क्या-क्या बड़बड़ाने लगता था वह।

किन्तु इधर कई दिनों से वह घटना उसके ध्यान से बिलकुल उतर गई थी, क्योंकि एक दूसरी ही समस्या उठ खड़ी हुई थी उसके सामने। बेकी थैकर कई दिनों से स्कूल नहीं आ रही थी। टॉम कई दिनों से अपने मन में जमे हुए गर्व से संघर्ष करता रहा। वह कोशिश करता रहा कि बेकी को अपने मस्तिष्क से पूरी तरह निकाल दे। किन्तु ऐसा न हो

सका। अनजाने ही वह वक्त-बेवक्त पहुंच जाता बेकी के घर की तरफ और उसीके आसपास चक्कर काटता रहता। वह बीमार थी। टॉम सोचता, कहीं वह मर गई तो क्या होगा! और उसके मन में एक टीस उठने लगती। डकैती और युद्ध की बातों में भी उसकी रुचि अब जाती रही। उसके जीवन में अब जैसे कोई रस ही न रह गया था। उसने खेलना-कूदना भी बंद कर दिया था।

टॉम की यह दशा देखकर पाली मौसी अत्यधिक चिंतित हो उठीं। वे तरह-तरह की दवाइयों का प्रयोग करने लगीं उसपर, किन्तु सब बेकार!

टॉम अधिकाधिक दुखी हो गया, निराशा उसे घेरती गई, घेरती ही गई। मौसी हैरान थीं। उन्हें किसी तरह का इलाज होता नहीं दिखता था।

टॉम स्कूल लगने से बहुत पहले वहां पहुंच जाता और स्कूल के फाटक पर ही खड़ा शून्यदृष्टि से सड़क की ओर देखता रहता।

और उस दिन इस तरह का इंतजार करते-करते एकाएक उसे बेकी दिखाई दी, तो वह खुशी से नाच उठा। बेकी को अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए वह तरह-तरह की हरकतें करता रहा। किन्तु बेकी ने उसकी तरफ ध्यान ही नहीं दिया। टॉम उसके नजदीक पहुंच गया। एक लड़के का हैट छीनकर हवा में उछाल दिया उसने। थोड़ी दूर पर गोल बनाकर बैठे कई लड़कों को इस तरह धक्का दिया उसने कि अब इधर-उधर जा गिरे, और खुद बेकी के एकदम पास आ

गिरा। मगर बेकी ने अपनी गर्दन ऊपर उठाकर अपना मुंह दूसरी तरफ घुमा लिया; और टॉम ने सुना, वह कह रही थी, "हूं, कुछ लोग समझते हैं कि वे बड़े अक्लमंद हैं!"

गहरा धक्का लगा टॉम को। उसने मन ही मन अपने भविष्य के सम्बन्ध में निश्चय कर लिया। दुःख और निराशा ने बुरी तरह घेर लिया उसे। लगने लगा जैसे दुनिया में उसका कोई दोस्त न हो, जैसे किसीको उससे तनिक भी प्यार न हो, वह जैसे सबके लिए त्याज्य हो गया हो। उसने हमेशा उचित कार्य ही किए किन्तु दुनिया वाले उसे ऐसा करने नहीं देना चाहते। वे तो उससे छुटकारा चाहते हैं। तो ठीक है, जैसा चाहते हैं वे, वैसा ही होगा, चाहे नतीजा कुछ भी हो। वह अब अपराधी बनेगा। हां, इसके सिवा अब और चारा ही क्या है! तभी स्कूल का घंटा बजने लगा, जिसे सुनकर वह सिसक उठा। हां, घण्टे के इस परिचित स्वर को अब कभी नहीं सुन सकेगा वह!

उसी समय जोय हारपर भी आ पहुंचा वहां। आंखें पोंछता हुआ टॉम कहने लगा कि वह इस गांव के अमैत्रीपूर्ण वातावरण को छोड़कर जा रहा है। और अंत में उसने जोय से कहा कि अपने दोस्त को कभी-कभी जरूर याद कर लिया करना।

किन्तु क्षण-भर में ही मालूम हुआ कि विदा ही लेने के लिए तो वह भी आया था टॉम के पास। उसे उसकी मां ने क्रीम पी जाने के अपराध में पीटा था, जबकि उसने क्रीम चखी तक न थी। सो उसने घर छोड़कर कहीं चले जाने का

इरादा कर लिया था।

एक ही पथ के इन दो यात्रियों ने थोड़ी देर में यह समझौता कर लिया कि वे भाई-भाई की तरह रहेंगे, और आखिरी सांस तक एक-दूसरे का साथ देंगे। जोय ने कहीं कुटिया बनाकर जीवन बिता देने का इरादा कर रखा था। किन्तु जब टॉम ने डाकू बनने की अपनी योजना बताई, तो उसकी भी आंखें चमक उठीं।

अब उन लोगों ने हकिलबरी को भी तलाश करके उसके सामने अपनी योजना रखी और वह भी डाकू-दल में शामिल होने को तुरन्त ही तैयार हो गया।

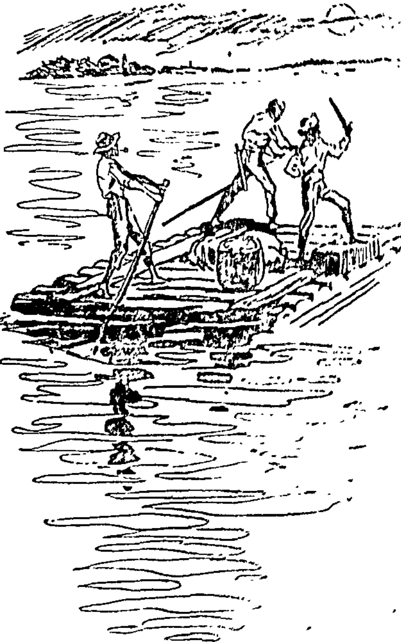
सैंट पीटर्सबर्ग से तीन मील दूर, जहां पर मिसीसिपी नदी का पाट एक मील चौड़ा हो गया था, वहीं एक लम्बा किन्तु संकरा द्वीप था। वह द्वीप जंगलों से भरा हुआ था और इसपर अभी तक मानव जाति बस नहीं सकी थी। सो इन तीनों ने इस द्वीप को ही अपना अड्डा बनाने का निश्चय किया।

ठीक आधी रात के समय टॉम निश्चित स्थान पर पहुंच गया। सांकेतिक स्वरों में तीनों ने विचारों का आदान-प्रदान किया और फिर एक ने पूछा, "कौन हो तुम ?"

"टॉम सायर, स्पेनी समुद्र का काला डाकू ! तुम लोग भी अपने-अपने नाम बताओ।"

"खूनी हाथों वाला हकिलबरी फिन ! सागर का आतंक जोय हारपर !"

टॉम ने ये पदवियां अपने प्रिय साहित्य में से चुनी थीं। वे तीनों नदी में नाव का काम देने वाला एक तख्ता



खींच लाए, जिसपर आग भी जल रही थी। नाविक अपने नावनुमा तख्ते छोड़कर अपने-अपने घरों को चले गए थे, सो तख्ता चुराने में कोई कठिनाई नहीं हुई। तख्ते को उन्होंने धार में छोड़ दिया और वह लहरों के सहारे चल पड़ा। रात दो बजे उनका वह नावनुमा तख्ता उनके निर्दिष्ट स्थान पर जा पहुंचा। जैक्सन द्वीप के रेतीले तट पर उसे लगाकर वे उतर पड़े। धीरे-धीरे सामान उतारा गया। तख्ते पर एक पुरानी बरसाती भी थी, जिसे उन लोगों ने झाड़ियों पर इस तरह डाल दिया कि एक खेमा-सा बन गया। उस खेमे में उन्होंने अपना माल-असबाब रख दिया। सोने का इरादा उन लोगों का खुले आसमान के नीचे ही था; क्योंकि डाकू ऐसा ही करते हैं, और वे डाकू बन चुके थे।

जंगल में आग जलाकर उन लोगों ने मांस आदि भून-पकाकर खाया और फिर घास पर लेटकर गप-शप करने लगे।

"गांव के और लड़के हमें यहां देखें तो क्या कहें ?" हकिल आकाश की ओर शून्यदृष्टि से ताकता हुआ बोला।

"वे यहां पहुंचने के लिए तरस उठें हकिल, तरस उठें!"

"मेरा भी यही खयाल है !" हकिल बोला, "जो भी हो, मेरे लिए तो यही स्थान उपयुक्त है। इससे अधिक और कुछ नहीं चाहता मैं।"

"और यही जीवन मेरे लिए भी उपयुक्त है।" टॉम ने मुस्कराकर कहा, "यहां न सुबह तड़के-तड़के अपनी नींद खराब करने का झगड़ा है, न स्कूल जाने का झंझट और न नहाने-धोने का बखेड़ा !"

हकिलबरी ने अपना पाइप तैयार करके उसमें तंबाकू भरी और उसपर एक चिनगारी रख दी। क्षण-भर बाद ही कश पर कश खींचने लगा वह और धुएं के छल्ले उड़ने लगे हवा में उमड़-घुमड़कर। अन्य दोनों डाकू हकिल का यह मजेदार काम देखकर ललचा उठे। मन ही मन निश्चय कर लिया उन दोनों ने कि वे भी हकिल से पाइप पीना सीख लेंगे।

"डाकुओं को करना क्या होता है?" हकिल ने एकाएक प्रश्न किया।

"अरे, बस जहाजों को लूटना, उनमें आग लगा देना और उनके यात्रियों का सारा धन लूटकर उसे ऐसे स्थान पर गाड़ देना उनका काम है, जहां भूत-प्रेत उसकी रखवाली करें। यही नहीं, वे जहाज के एक-एक आदमी को मार डालते हैं।"

"और औरतों को क्या वे टापू पर ले आते हैं?" जोय हारपर ने पूछा।

"हां, वे औरतों को नहीं मारते, क्योंकि वे बड़ी सीधी-सादी होती हैं; और सुन्दर भी तो होती हैं वे!"

"और वे हीरे-जवाहरात-टंके कपड़े भी तो पहनते होंगे!" उत्साह से बोला जोय।

"कौन?" हकिल ने प्रश्न किया।

"वही डाकू लोग!"

हकिल ने अपने फटे-पुराने कपड़ों को झटककर दुःखपूर्ण स्वर में कहा, "मेरे कपड़े शायद डाकुओं जैसे नहीं हैं, लेकिन इनके अलावा मेरे पास और कपड़े हैं भी तो नहीं।"

अन्य दोनों डाकुओं ने उसे यह कहकर सांत्वना दी कि

डकैती का काम शुरू होते ही बढ़िया-बढ़िया कपड़ों का ढेर लग जाएगा।"

धीरे-धीरे बातचीत का सिलसिला टूटता गया और वे एक-एक करके सोते गए।

सुबह टॉम की नींद टूटी तो उसकी समझ में ही न आया कि वह है कहां। वह तेजी से उठ बैठा और बार-बार आंखें मलकर अपने चारों ओर देखने लगा। फिर धीरे-धीरे सब-कुछ याद आने लगा उसे।

उसके दोनों साथी भी उठ गए तो वे तीनों नदी-तट की ओर गए। वहां उनका नावनुमा तख्ता नहीं दिखाई दिया। रात में नदी की लहरें शायद रेत तक आ गई थीं और उनके उस तख्ते को बहा ले गई थीं। किन्तु इससे उनको जरा भी दुःख नहीं हुआ, क्योंकि इस तरह उनके और सभ्यसमाज के बीच रही-सही आखिरी कड़ी भी टूट गई थी। यही वे चाहते भी थे। गांव लौटने की कोई इच्छा नहीं थी उनकी।

वे तैरते रहे, मछली मारते रहे, तट की रेत पर लोटते पोटते रहे और पूरे टापू का चक्कर लगाते रहे। सब कुछ बहुत अच्छा लग रहा था उन्हें, बहुत ही अच्छा!

किन्तु आज बातचीत में मन नहीं लग रहा था उनका विचारों में खोए हुए थे वे तीनों। घर के धुंधले-धुंधले-से चि उभरकर आते थे उनकी आंखों के सामने। यहां तक f हकिलबरी को भी अपने झोंपड़े की याद आ रही थी। कि वे तीनों अपनी कमजोरी पर स्वयं ही शर्मिन्दा थे और इ सम्बन्ध में एक-दूसरे से कुछ कह नहीं रहे थे।



एकाएक तरह-तरह की आवाजें आने लगीं और वे चौंक-कर नदी-तट की ओर दौड़ चले। झाड़ियों को इधर-उधर हटा-हटाकर वे नदी की ओर देखने लगे। बहुत-सी नावों पर सवार ढेर के ढेर लोग दीख रहे थे। लग रहा था जैसे वे किसी डूबे हुए व्यक्ति को खोजने की कोशिश कर रहे हों। इन तीनों की समझ में नहीं आ रहा था कि कौन डूब गया है।

सहसा टॉम के मस्तिष्क में एक नया विचार कौंध गया। प्रसन्न स्वर में वह बोला, "मैं समझ गया जिसे ढूंढ़ रहे हैं ये लोग। हमें ही ढूंढ़ा जा रहा है इस तरह। गांव वाले समझ रहे हैं कि हम लोग डूब गए हैं।"

इतना सुनते ही उन दोनों की भी आंखें चमक उठीं। गर्व से सिर ऊंचा हो गया उनका।

शाम होते-होते नावें गांव की ओर लौट गईं और तीनों नन्हे डाकू अपने शिविर को लौट आए। वे बहुत खुश थे, बहुत खुश! उन्हें लग रहा था, जैसे बहुत बड़ा मैदान जीत लिया हो उन लोगों ने; किन्तु जैसे-जैसे रात का अंधकार गाढ़ा होता गया, उनका उत्साह, उनकी खुशी खोती गई। बातचीत बंद कर दी उन लोगों ने और आग की लपटों पर नजर जमाए जाने किन विचारों में खोए-खोए-से बैठे रहे चुप-चाप। जोय ने सभ्य समाज में बैठने की कुछ बात चलाई तो टॉम ने उसकी कमजोरी का मजाक उड़ाना शुरू कर दिया। हकिलबरी भी टॉम की हां में हां मिलाने लगा।

रात गाढ़ी होती गई, हकिल ऊंघने लगा और फिर लेट-कर सो गया। उसके बाद जोय भी सो गया। टॉम विचारों

में खोया हुआ कुहनी के बल लेटा हुआ था। एकाएक उठकर उसने दो अंजीर के पत्ते खोजे और उनपर एक कील से जाने क्या लिखा। एक पत्ते को उसने मोड़कर अपनी जैकेट की जेब में डाल लिया और एक जोय के हैट में रखकर हैट को जोय से थोड़ी दूरी पर रख दिया। हैट में उसने अपना खज़ाना भी रख दिया, जिसमें चॉक, रबर की गेंद, मछली फंसाने का कांटा आदि अनेक बहुमूल्य वस्तुएं थीं।

चंद मिनट बाद ही टॉम नदी में कूद पड़ा और तैरता हुआ गांव की ओर चल पड़ा। किनारे पहुंचकर वह घर की ओर चल पड़ा। वह घर पहुंचा तो बैठक के कमरे में रोशनी हो रही थी। खिड़की से झांका उसने—मौसी, सिड, मेरी और जोय हारपर की मां बैठी बातचीत कर रही थीं।

टॉम दरवाज़े के पास गया और धीरे-धीरे उसे खोलने लगा। कई बार दरवाज़े की चर्र-मर्र आवाज हुई, पर किसीने ध्यान नहीं दिया। अंत में मौसी का ध्यान चला ही गया। वे बोलीं, "अरे, यह मोमबत्ती की लौ फड़फड़ा क्यों रही है? और दरवाज़ा कैसे खुल गया? जा सिड, दरवाज़ा बंद कर ले!"

किन्तु इस समय तक टॉम बिस्तर के नीचे जा छिपा था। सांस रोके पड़ा हुआ था वह वहां।

"लेकिन वह ऐसा बुरा लड़का नहीं था," मौसी बोलीं, "हां, थोड़ा शरारती जरूर था। ऊपर से चिल्लाता जरूर था वह, मगर उसका हृदय बहुत पाक-साफ था। इतना भला लड़का मैंने कहीं नहीं देखा!" और वे रोने लगीं।

"मेरा जोय भी ऐसा ही था। हर तरह की शरारतें करता था, मगर स्वार्थ या और कोई बुराई उसे छू तक नहीं गई थी। मैंने उसे क्रीम खाने के लिए पीटा और मुझे याद भी न आया कि मैंने खुद ही क्रीम खराब हो जाने के कारण फेंक दी थी। ओह, अब मैं उसे कभी न देख सकूंगी, कभी नहीं, कभी नहीं!" और श्रीमती हारपर बुरी तरह सिसकने लगीं।

"मेरे खयाल से टॉम जहां भी होगा, मजे में होगा!" सिड बोला, "अगर ऐसा न होता तो..."

"चुप रह सिड!" मौसी ने क्रोधपूर्ण स्वर में कहा, "मेरे टॉम के खिलाफ कुछ भी कहेगा तो अच्छा न होगा। अब वह हमेशा के लिए जा चुका है। वह जहां भी रहेगा, ईश्वर उसकी रक्षा करेगा। मेरी तो समझ में नहीं आता श्रीमती हारपर, कि मैं उसे कैसे भुलाऊं, कैसे भुलाऊं! वह मेरे बूढ़े हृदय को बहुत सताता था, मगर कितना प्यार भी करता था वह मुझे!"

वे दोनों रोती रहीं, एक-दूसरे को सांत्वना देने की कोशिश करती रहीं। टॉम भी बिस्तर के नीचे पड़ा-पड़ा सिसकियां भरने लगा था। मेरी की सिसकियां साफ सुनाई पड़ रही थीं उसे। रह-रहकर इच्छा हो रही थी उसकी कि बिस्तर के नीचे से निकलकर मौसी से लिपट जाए, किन्तु अपने को काबू में किए हुए था वह। टॉम पड़ा-पड़ा सारी बातें सुनता रहा। उन बातों से उसे पता चल गया कि गांव वालों ने समझ लिया है कि वे तीनों डूब गए हैं। उनकी लाशें खोजने की बराबर कोशिश हो रही है। अगर रविवार तक लाशें नहीं मिलेंगी, तो सारी आशा छोड़ दी जाएगी और चर्च में उनके

लिए मातम मनाया जाएगा, उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा।

श्रीमती हारपर ने सिसकते हुए मौसी को नमस्कार किया और चली गईं।

सिड सिसकता हुआ अपने कमरे में चला गया। मेरी बुरी तरह रोती हुई कमरे से बाहर चली गई। मौसी घुटनों के बल बैठकर टॉम के लिए प्रार्थना करने लगीं। इतनी वेदना, इतना गहरा दुःख और टॉम के प्रति इतना अथाह प्यार छलका पड़ रहा था उनके स्वर में कि टॉम के लिए अपने को संभाल पाना कठिन हो रहा था।

प्रार्थना के बाद वे बिस्तर पर लेट गईं और थोड़ी देर तक जाने क्या-क्या बड़बड़ाती रहीं। फिर बिलकुल शांत हो गईं। नींद से उनकी आंखें मुंद गई थीं।

टॉम ने निकलकर पहले तो अंजीर के पत्ते को मोमबत्ती के निकट रख दिया। फिर उसे जाने क्या सूझा कि पत्ते को उठाकर उसने अपनी जेब में रख लिया, झुककर मौसी के मुरझाए हुए होंठों को चूम लिया और कमरे से बाहर हो गया। तट पर पहुंचकर वह एक नाव पर सवार हो गया और अपने साथियों के पास चल पड़ा।

जिस समय वह द्वीप पर पहुंचा, हकिल और जोय उसीके बारे में बातें कर रहे थे। जोय कह रहा था, "नहीं, नहीं, हकिल, टॉम ऐसा नहीं है। वह हमें छोड़कर कहीं नहीं जा सकता।"

और तभी टॉम ने बड़े नाटकीय ढंग से दस्यु-शिविर में

प्रवेश कर अपने साथियों को आश्चर्य में डाल दिया।

दिन-भर उछलते-कूदते रहे वे तीनों, किन्तु धीरे-धीरे हर खेल से जी भर गया उनका और वे अपने-अपने विचारों में खो गए। अनजाने ही टॉम पैर के अंगूठे से बालू पर 'बेकी' लिखता बैठा रहा। जोय हारपर बैठा अपने घर के बारे में सोच रहा था। इतना द्रवित हो गया था वह कि आंसू उसकी आंखों की ड्योढ़ी पर आ टिके थे। हकिलबरी भी बहुत उदास दिख रहा था।

जोय बालू में एक सींक से छेद करता बैठा रहा देर तक और फिर अंत में बोल उठा, "मैं तो भैया अब मर जाऊंगा। इस एकान्त में मुझसे न रहा जाएगा।"

"धीरे-धीरे तुम्हें यहां अच्छा लगने लगेगा जोय," टॉम बोला, "सोचो, यहां मछली मारने में कितना मजा आता है!"

"गोली मारो मछली मारने को! मैं तो मर जाऊंगा।"

"मगर जोय, तैराकी के लिए इससे बढ़कर कोई स्थान नहीं है।"

"मुझे नहीं करनी है तैराकी-वैराकी! मैं तो बस मर जाना चाहता हूं।"

"तो बच्चूजी अम्मां को देखना चाहते हैं?" व्यंग्य किया टॉम ने।

"हां हां, मैं अपनी मां को देखना चाहता हूं। तुम्हारी मां होती तो तुम भी उसे देखने के लिए तरसते।" गुस्से से कहा जोय ने।

"ठीक है, इस रोने बच्चे को हम घर चला जाने देंगे, है

न हकिल ?…हम लोग भैया यहीं रहेंगे !"

अनमने भाव से हकिल ने 'हां' कह दिया।

"इस जीवन में अब मैं तुमसे कभी बात तक न करूंगा।" और जोय उठकर अपने कपड़े पहनने लगा।

"किसे परवाह है तेरी !"

इतने में हकिल भी बोल उठा, "मैं भी घर जाऊंगा टॉम !" और वह भी अपने कपड़े उठाने लगा।

टॉम अकड़ा बैठा रहा। किन्तु वे दोनों काफी दूर निकल गए तो उन्हें रोकना ही पड़ा। अब उसने अपने अंतिम अस्त्र के रूप में अपनी नई योजना बताई, जिसे सुनकर जोय और हकिल उसके साथ रुके रहने को तैयार हो गए।

इधर गांव में बड़ी उदासी छाई हुई थी। गांव के उन तीनों बच्चों का अभी तक कोई पता नहीं लगा सका था; इसलिए मातम की तैयारियां शुरू हो गईं। सारे गांव में असाधारण सन्नाटा छाया हुआ था।

बेकी थैकर दोपहर तक उन स्थलों पर घूमती रही, जहां कभी उसने टॉम के साथ बातें की थीं, जहां उसके साथ वह खेली-कूदी थी। टॉम के साथ अपने व्यवहार पर अत्यधिक दुःख हो रहा था उसे। वह टॉम को याद करके सिसक-सिसक पड़ती थी।

रविवार को सुबह सण्डे-स्कूल का समय समाप्त होने पर चर्च का घंटा असाधारण रूप से बजने लगा। गांव के लोग चर्च में इकट्ठे होने लगे। देखते ही देखते चर्च का हाल ठसाठस भर गया। अंत में मौसी पाली सिड और मेरी के साथ

आई। हारपर-परिवार भी आ गया उनके पीछे-पीछे। दोनों परिवारों के लोग एकदम मातमी काले वस्त्र पहने हुए थे। वातावरण में गहरा सन्नाटा व्याप्त था, जिसमें बीच-बीच में सिसकियां गूंज जाती थीं।

अन्त में पादरी ने उठकर अपने दोनों हाथ फैलाकर तीनों मृत बच्चों की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। फिर बाइबल का अत्यधिक करुण पद गाया गया।

इसके बाद पादरी ने तीनों मृत बच्चों के प्रशंसापूर्ण चित्र खींचने शुरू किए। उन्होंने उनके जीवन की कुछ ऐसी करुण घटनाओं की भी चर्चा की, जिससे उन बच्चों के हृदय की विशालता का परिचय मिलता था। पादरी का भाषण निरंतर करुणा से भरता गया, और अंत में उपस्थित समुदाय सिसकियां भरने लगा। पादरी स्वयं भी सिसकने लगे थे।

तभी बरामदे में आवाज होने लगी और फिर चर्च का दरवाज़ा धीरे-धीरे खुल गया। पादरी ने अपनी आंखों पर से रुमाल हटाकर दरवाज़े की ओर देखा। धीरे-धीरे हॉल में उपस्थित पूरे समुदाय की नज़रें उधर ही घूम गईं। तीनों मृत बच्चे उनके सामने उपस्थित थे। पहले टॉम ने, फिर जोय हारपर ने और फिर हकिल बरी ने हाल में प्रवेश किया। पाली मौसी, मेरी और हारपर-परिवार ने लपककर टॉम और जोय को सीने से लगा लिया और उनपर चुम्बनों की वर्षा करने लगे। हकिल उलझन में पड़ा खड़ा रहा। समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे।

तभी टॉम बोला, "मौसी, यह तो ठीक नहीं। हकिल को


HYMNS
571
50

देखकर भी तो खुश होना चाहिए किसीको !"

"हां, हां, टॉम, इसे देखकर मुझे बड़ी खुशी हो रही है। बेचारा बिना मां का बच्चा !"

किन्तु पाली मौसी की ममता-भरी दृष्टि ने हकिल को और अधिक बेचैन बना दिया।

टॉम क्षण-भर में ही गांव-भर के बच्चों के लिए ईर्ष्या का पात्र बन गया था। और स्वयं टॉम का हृदय गर्व से भर उठा था।

तो यह भी टॉम की योजना थी, जिसके बल पर उस दिन उसने अपने डाकू साथियों को टापू पर रोका था !





बेकी भी बहुत खुश थी टॉम के वापस आ जाने से। उसने उससे समझौता कर लेने का निश्चय कर रखा था। मगर टॉम के मन में कुछ और ही था। उसने बेकी से दूर ही रहने की सोच रखी थी इसलिए बेकी के लाख कोशिश करने पर भी उसने उसकी ओर ध्यान न दिया।

फिर भी बेकी उसे अपनी ओर आकर्षित करने की लगातार कोशिश करती रही। किन्तु जब टॉम ने एमी लारेंस के साथ घूमना शुरू किया तो बेकी के आत्मसम्मान को गहरा धक्का लगा। उसने भी ऐल्फ्रेड टेम्पेल को पकड़ा और टॉम को दिखा-दिखाकर उसके साथ तस्वीरों की एक पुस्तक देखने लगी।

टॉम ईर्ष्या से जल उठा। एमी लारेंस का साथ जैसे बोझ बन गया उसके लिए। और वह उससे पीछा छुड़ाने की गरज से दोपहर में घर चला गया।

उसके जाते ही बेकी को चिढ़ होने लगी ऐल्फ्रेड से और अन्त में तो वह चीख-सी पड़ी, "चले जाओ ऐल्फ्रेड, चले जा

मुझे अकेली ही रहने दो । मैं तुमसे घृणा करती हूं ।"

ऐल्फ्रेड चौंक-सा पड़ा । किन्तु वह सारा मामला समझ चुका था । टॉम के प्रति गहरी घृणा भर गई थी उसके मन में। और तभी मौका भी मिल गया बदला लेने का उसे । उसने तुरन्त ही स्याही उंडेल दी उसपर । बेकी ने सब कुछ देखा । एक बार इच्छा हुई कि टॉम से बता दे; किन्तु फिर रोक लिया उसने अपने-आपको । उसने सोचा, टॉम को मार पड़ेगी तो मजा आएगा, बच्चू बहुत अकड़ते हैं ।

बेचारी को पता क्या था कि वह स्वयं ही परेशानी में फंसने जा रही है ।

उन लोगों के मास्टर मिस्टर डाबिन्स क्लास के बीच जाने कौन-सी पुस्तक अपनी डेस्क से निकालकर रोज पढ़ा करते थे । किन्तु आज तक किसीने उस पुस्तक को देखा नहीं था । आज बेकी को मौका मिल गया । जल्दी से डेस्क खोलकर वह पुस्तक निकालकर उलटने-पुलटने लगी। उसकी नजरें पूर्णतया नग्न मानव-शरीर की तस्वीर पर अटक गईं । तभी टॉम झांककर तस्वीर को देखने लगा । बेकी ने झटके से पुस्तक बन्द करने की कोशिश की और तस्वीर वाला पेज बुरी तरह फट गया । बेकी सुबक-सुबककर रोने लगी । वह जानती थी कि अब उसे निश्चित रूप से मार खानी पड़ेगी। खूब बुरा-भला भी कहा उसने टॉम को ।

क्लास लगी । जरा देर में ही टॉम की कापी पर स्याही गिरी देख ली मास्टर साहब ने और टॉम की खूब पिटाई हुई। बेकी सोचने की कोशिश करती रही कि टॉम को मार पड़ने से

खुशी हो रही है उसे, किन्तु वास्तव में वह खुश हो नहीं सकी। मार खाकर टॉम चुपचाप अपनी सीट पर आ बैठा।

एक घंटा तो खैरियत से बीत गया। किन्तु अन्त में मास्टर ने अपनी डेस्क में से पुस्तक निकाल ही ली। बेकी का चेहरा सफेद पड़ गया। टॉम बेकी की ओर गौर से देख रहा था। मास्टर पुस्तक उलटते रहे। एकाएक उनकी नजर फटी हुई तस्वीर पर पड़ी और उनका चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। वे बोले, "किसने फाड़ी है यह किताब?"

सन्नाटा छाया रहा क्लास में।

उन्होंने प्रत्येक विद्यार्थी से प्रश्न करना शुरू किया।

अन्त में बेकी का नम्बर आ ही गया। मास्टर ने पूछा, "रैबेका थैकर, क्या तुमने फाड़ी है यह किताब?"

टॉम ने उसकी ओर देखा, उसका चेहरा आतंक से विकृत हो उठा था। वह कुछ कहने को उठी। किन्तु उसी क्षण टॉम उठकर चिल्ला उठा, "किताब मैंने फाड़ी थी।"

हैरानी से ताकने लगी सारी क्लास टॉम को।

बुरी तरह पिटाई हुई टॉम की। किन्तु वह बहुत खुश था।

टॉम उस दिन रात में बिस्तर पर लेटा तो उसका मस्तिष्क ऐल्फ्रेड टेम्पेल को मजा चखाने की योजना बना रहा था। क्योंकि बेकी इतनी शर्मिन्दा हुई थी और उसे अपने किए पर इतना पछतावा था कि उसने टॉम से सब कुछ कह डाला था।

टॉम की आँखों में नींद थी और उसके कानों में बेकी के ये शब्द मिठास घोल रहे थे, "टॉम, तुम कितने अच्छे हो, कितने अच्छे!"



८

स्कूल में छुट्टियां हो जाने के कारण इधर गांव का जीवन घटना-रहित हो गया था। किन्तु उस दिन पॉटर का मुकदमा आरम्भ हुआ तो वातावरण फिर उत्तेजित हो उठा। टॉम न चाहते हुए भी दोनों दिन अदालत का चक्कर काटता रहा और मुकदमे की कार्रवाई सुनने की कोशिश करता रहा। ह्किलवरी की भी बिलकुल यही दशा थी। किन्तु वे दोनों एक-दूसरे से कतराते-से रहे।

दूसरे दिन टॉम कान लगाकर मुकदमे की कार्रवाई सुनता रहा। अन्त में लोग अदालत से निकले तो उनकी बातों से टॉम को पता लग गया कि इंजुन जोय की गवाही बिलकुल दृढ़ बनी हुई है। उसे अपने बयान से कोई विचलित नहीं कर सका। पॉटर का डाक्टर राबिन्सन की हत्या का अपराध साबित हो चुका था और यह निश्चय था कि जूरी का फैसला क्या होगा।

टॉम उस दिन रात में बहुत देर तक घूमता रहा। जब वह घर लौटा तो उसका मस्तिष्क अत्यधिक उत्तेजित था।

घंटों नींद नहीं आई उसे।

दूसरे दिन सुबह अदालत में बहुत भीड़ हुई। सारा गांव मुकदमे का फैसला सुनने के लिए उमड़ पड़ा था। जूरी और जज के आ जाने पर शेरिफ ने मुकदमे की कार्रवाई आरम्भ की।

वकीलों में धीरे-धीरे बातचीत हुई, कागज उलटे-पुलटे गए और फिर एक गवाह को बुलाया गया। उसकी गवाही हुई। पॉटर ने अपनी निस्तेज दृष्टि उठाकर देखा और नज़रें झुका लीं। उसके वकील ने कहा, "मुझे कोई प्रश्न नहीं पूछना है।"

दूसरा गवाह आया और उसने बयान दिया कि लाश के निकट ही चाकू पड़ा मिला था।

"इनसे भी मुझे कोई प्रश्न नहीं पूछना है।" पॉटर के वकील ने कहा।

तीसरे गवाह ने कहा कि उसने उस चाकू को अक्सर पॉटर के हाथ में देखा था, जिससे हत्या की गई थी।

इस गवाह से भी पॉटर के वकील ने जिरह नहीं की।

उपस्थित दर्शकों के चेहरे क्रोध से विकृत हो उठे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह वकील अपने मुवक्किल की जान बचाने की कोई भी कोशिश क्यों नहीं करना चाहता?

गवाह आते गए और गवाही देते गए, किन्तु पॉटर के वकील ने किसीसे भी जिरह नहीं की। गहरा असंतोष छा गया दर्शकों में।

सबूत-पक्ष का वकील हत्या-सम्बन्धी सारी परिस्थितियों को

साबित करके अपने स्थान पर बैठ गया।

पॉटर के मुंह से एक कराह निकल गई और उसने अपने हाथों में मुंह छिपा लिया।

अब पॉटर के वकील ने कहा, "हुजूर, मुकदमे के आरंभ में मैंने यह दलील दी थी कि हमारे मुवक्किल ने शराब के नशे में हत्या की थी और उस समय वह अपने होश-हवास में न था। लेकिन अब हमने अपना इरादा बदल दिया है। बचाव के लिए अब हम यह दलील नहीं देंगे।" फिर चपरासी की ओर मुड़कर उसने कहा, "टॉमस सायर को बुलाओ।"

दर्शक आश्चर्य-चकित रह गए। पॉटर भी आश्चर्य से नजरें उठाकर देखने लगा।

टॉम ने आकर गवाहों के कटघरे में अपना स्थान ग्रहण कर लिया। उसे शपथ दिलाई गई।

"टॉमस सायर, १७ जून को आधी रात के समय तुम कहां थे?"

टॉम ने इंजुन जोय के कठोर चेहरे की ओर देखा। उसकी जबान कुछ भी कहने से इन्कार करने लगी। दर्शक सांस रोके सुन रहे थे। थोड़ी देर तक टॉम कुछ कह नहीं सका। फिर धीरे-धीरे साहस बटोरकर उसने कहा, "कब्रिस्तान में!"

"जरा जोर से कहो! डरो नहीं! कहां थे तुम?"

"कब्रिस्तान में।"

इंजुन जोय के चेहरे पर एक कुटिल मुस्कराहट फैल गई।

"क्या तुम हार्स विलियम की कब्र के निकट ही कहीं थे?"

"जी हां!"

"ज़रा ज़ोर से बोलो ! कितनी दूर थे तुम विलियम की कब्र से ?"

"जितनी दूर इस समय मैं आपसे हूं।"

"तुम छिपे हुए थे या नहीं ?"

"हां, मैं छिपा हुआ था।"

"कहां ?"

"एक पेड़ के पीछे।"

इंजुन शून्य में ताक रहा था।

"कोई तुम्हारे साथ था ?"

"हां, मैं वहां…"

"रुको, रुको, तुम्हें अपने साथी का नाम बताने की कोई ज़रूरत नहीं है। हम उसे उचित समय पर पेश करेंगे।…तो तुम लोग अपने साथ कोई चीज भी ले गए थे ?"

टॉम चक्कर में पड़ा खड़ा रहा।

"बोलो मेरे बच्चे ! डरो नहीं, सत्य की हमेशा कद्र होती है। क्या ले गए थे तुम अपने साथ ?"

"केवल एक मरी हुई बिल्ली।"

धीरे से हंस पड़े सब लोग।

"हम लोग उस बिल्ली की ठठरी अदालत में पेश करेंगे। …अच्छा बेटे अब बताओ, वहां तुमने क्या देखा ? कोई बात छिपाना नहीं !"

टाम ने हिचकते-हिचकते कहना शुरू किया। धीरे-धीरे उसके स्वर में तेजी आती गई और फिर पूरे जोश से सारी घटना सुनाने लगा। हर व्यक्ति मुंह बाए सुन रहा था उसका

वयान। सवके चेहरे पर आश्चर्य था। उस समय दर्शकों की उत्तेजना अपनी चरम सीमा पर पहुंच गई जव टॉम ने अपने वयान के अन्त में कहा, "और डाक्टर ने कब्र का हेडबोर्ड उठाकर मफ पॉटर के सर पर दे मारा। वह ज़मीन पर गिर पड़ा। इंजुन जोय ने इसी समय चाकू उठा लिया और..."

तभी एक जोर की आवाज हुई। इंजुन जोय विजली की सी तेज़ी से उठा और लोगों को इधर-उधर ढकेलता हुआ खिड़की फांदकर गायव हो गया।

टॉम इस घटना के वाद गांव-भर का हीरो वन गया—वड़े-बूढ़ों का दुलारा, वच्चों के लिए ईर्ष्या का पात्र !

किन्तु टॉम के मन में इंजुन जोय का भय इस कदर समा गया था कि उसे ठीक से नींद तक न आती थी।

इंजुन को पकड़ने की वड़ी कोशिशें की जा रही थीं, किंतु वह ऐसा गायव हो गया था कि लगता था जैसे गांव में हो ही नहीं।



९

हर बालक के जीवन में एक ऐसा समय आता है जब वह चाहता है कि कहीं गड़ा हुआ खज़ाना खोद निकाले। टॉम के मन में एक दिन यह इच्छा उत्पन्न हो गई। उसने किसी साथी की खोज करनी शुरू की, किन्तु कोई मिला ही नहीं। कोई कहीं गया था, कोई कहीं। अन्त में टॉम हकिलबरी के पास गया। उसे एकान्त में ले जाकर उसने अपनी योजना बताई। हकिलबरी भला इस प्रकार के काम में कब पीछे रहने वाला था! वह टॉम का साथ देने को तुरंत तैयार हो गया।

टॉम का खयाल था, खज़ाना या तो सूखे हुए वृक्षों के आसपास गड़ा है या भुतहे स्थानों पर। इसलिए ऐसे ही स्थानों पर खज़ाने की खोज शुरू हुई। रोज आधी रात गए वे फावड़ा और कुदाल लेकर एक न एक ऐसे स्थान की खुदाई करते, किन्तु निराशा के सिवा कुछ हाथ न लगता।

अन्त में उन दोनों ने कार्डिफ पहाड़ी पर बने भुतहे मकान में खज़ाने की तलाश करने का निश्चय किया। जब वे वहाँ पहुँचे तो वहाँ उनकी इंजुन जो से मुठभेड़ हो गई।

तरह उसकी नजरों से बचकर वे उसे देखते रहे। इंजुन जोय के साथ उसका एक साथी भी था। वे दोनों भविष्य की योजनाओं पर बातचीत करते रहे।

अंत में उन दोनों ने वह खजाना खोज निकाला जिसकी तलाश में टॉम हकिलबरी के साथ वहां गया था। बड़ा धक्का लगा उन दोनों को।

किन्तु जब उस दिन इंजुन जोय दिख गया तो दोनों उसके पीछे लग गए। उसका खजाना तो उन्हें हथियाना ही था किसी तरह।

शुक्रवार के दिन सुबह ही टॉम को पता चला कि न्यायाधीश थैकर का परिवार वापस आ गया है। इतना सुनते ही वह इंजुन जोय और खजाने को भूल गया। वह तुरन्त ही बेकी के पास गया। दोनों खेलते रहे देर तक साथ-साथ। शाम को बेकी ने अपनी मां से जिद करना शुरू किया कि अगले दिन पिकनिक पर जाने का इन्तजाम कर दे। उसकी मां मान गई और तुरन्त ही पिकनिक की तैयारी हो गई।

चलते समय टॉम ने बेकी से कहा, "रात-भर हम लोग जोय हारपर के यहां रहने के बजाय पहाड़ी की चोटी पर श्रीमती डगलस के मकान में रहेंगे बेकी। वे हमें आइसक्रीम खिलाएंगी। बहुत बढ़िया आइसक्रीम बनाती हैं वे। और हमें देखकर वे इतनी खुश होंगी, इतनी खुश होंगी कि…"

"मगर मां क्या कहेंगी टॉम?"

"मां को कभी मालूम ही नहीं हो सकेगा बेकी।"

"ठीक है, मगर यह अच्छी बात नहीं।"

"अरे, गोली मारो अगर-मगर को ! तुम्हारी मां तो बस इतना चाहती है कि तुम सुरक्षित रहो । और अगर तुम कहतीं तो वे निश्चित रूप से तुम्हें श्रीमती डगलस के यहां रहने की इजाजत दे देतीं ।"

इसलिए बेकी को टाम की बात माननी पड़ी ।

कस्बे से तीन मील दूर एक जंगली स्थान पर नावें जा लगीं । पार्टी उतर पड़ी । तट पर तरह-तरह के खेल-कूद शुरू हो गए । जंगल और पहाड़ियां गूंज उठीं बच्चों की खिलखिलाहट से, शोरगुल से । थक जाने पर सबने कैंप में लौटकर भोजन किया । भोजन समाप्त होते-होते किसीने कहा, "गुफा में कौन चलेगा ?"

भला इनकार किसको हो सकता था ! इसलिए ढेर की ढेर मोमबत्तियां लेकर वे चल पड़े पहाड़ी के ऊपर बनी मैकडागल गुफा की तरफ । खोह के फाटक पर पहुंचकर मोमबत्तियां जलाई गईं और दो-दो, चार-चार की टोली में चल पड़ी सारी पार्टी खोह के अन्दर । थोड़ी दूर पर ही गुफा अनेक शाखाओं में बंट गई थी । लोग कहते थे कि यह खोह ऐसी थी कि इसमें रात-दिन आदमी घूमता ही रह जाए और खोह का कहीं अन्त न मिले । गुफा में थोड़ी दूर का रास्ता ही मालूम था सबको । सो वह पार्टी थोड़ी दूर तक ही घूमती रही गुफा के अन्दर ।

काफी देर बाद जब वे गुफा के अन्दर से निकले तो [illegible] हो चली थी । इसलिए सब के सब तेजी से [illegible] चल पड़े ।

हकिलवरी उस दिन टॉम से भेंट न होने पर भी इंजुन जोय के पीछे लगा रहा। उसका पीछा करते-करते वह पर्वत पर पहुंच गया। घोर जंगली स्थान था वह।

वहां पहुंचकर उसे इंजुन और उसके साथी की बातों से पता चला कि वे श्रीमती डगलस की हत्या करने के विचार से वहां गए थे, जो एक सीधी-सादी विधवा थीं। घबराकर हकिल निकट ही बूढ़े दादा वेल्शमैन के यहां दौड़ा गया। उनसे सब कुछ कह डाला उसने। वेल्शमैन अपने दो नौजवान लड़कों के साथ बन्दूक लेकर चल पड़े। इंजुन और उसके साथी को उन्होंने मार गिराने की कोशिश की; किन्तु निशाना चूक गया और वह भाग निकला।

इस घटना से इतना मानसिक आघात लगा हकिलबरी को कि वह बुरी तरह बीमार पड़ गया। श्रीमती डगलस पूर्ण मनोबल से उसकी सेवा-सुश्रूषा करती रहीं।

१०



रविवार को थैकर-परिवार और पाली मौसी को पता चला कि बेकी और टॉम का कहीं पता नहीं है तो उनके मन में तरह-तरह की चिन्ताएं होने लगीं। तुरन्त अनुमान लगा लिया उन लोगों ने कि शायद टॉम और बेकी उस रहस्यपूर्ण गुफा में ही खो गए और पिकनिक-पार्टी के साथ वापस नहीं लौटे। श्रीमती थैकर फफक पड़ीं जोर से। पाली मौसी भी हाथों में मुंह छिपाकर बुरी तरह रोने लगीं।

तुरन्त ही मशालों के साथ एक दल खोज करने के लिए भेजा गया। न्यायाधीश थैकर स्वयं गुफाओं में अपनी बेटी और टाम को खोजने गए।

गुफा में एक स्थान पर मोम बत्ती के धुएं से बेकी और टाम लिखा मिला। बेकी के बालों का फीता भी मिला उन लोगों को एक जगह।

श्रीमती थैकर ने वह फीता देखा तो वे भी बुरी तरह रोने लगीं। उन्होंने निश्चित समझ लिया कि उनकी बेटी हमेशा के लिए उनसे छिन गई।

किन्तु न्यायाधीश थैकर बराबर गुफाओं में उन दोनों की खोज करने में लगे रहे।

तीन दिन बीत गए इसी तरह, किन्तु टॉम और बेकी का कहीं पता नहीं लगा।

उस दिन जब टॉम और बेकी गुफा में घुसे थे, तो बातें करते हुए वे अनजाने ही बढ़ गए थे एक तरफ। चलते-चलते एक ऐसे स्थान पर पहुंच गए जहां एक झरना बह रहा था। पास ही दो दीवारों के बीच एक सीढ़ी-सी बनी थी। उसे देखते ही टॉम के अन्दर नई-नई खोज करने की उसकी प्रवृत्ति जाग उठी। बेकी भी उसका साथ देने को तैयार हो गई। इसलिए वहीं मोमबत्ती के धुएं से निशान बनाकर दोनों हाथों में हाथ दिए नई-नई चीजों की खोज करने के लिए आगे बढ़ने लगे।

किन्तु एक पर एक रास्ता खुलता गया उनके सामने। गुफाओं का अन्त ही नहीं था कहीं। अब घबराहट होने लगी उन दोनों को। बेकी ने कहा, "बहुत देर से अपने साथियों की आवाज़ नहीं सुनाई दी हमें टॉम! चलो, वापस चलें। रास्ता तो पा जाओगे न तुम?"

"हां, पा जाऊंगा! मगर इस तरफ तो चमगादड़ हैं। कहीं दोनों मोमबत्तियां बुझा दीं इन चमगादड़ों ने तो फिर रास्ता नहीं मिलेगा अंधेरे में। चलो, दूसरी तरफ से वापस चलने की कोशिश करें!"

"हम खो तो नहीं जाएंगे टॉम?"

"नहीं बेकी, नहीं।"

और वे एक गलियारे जैसी गुफा में चलने लगे। बड़ी देर

तक वे चलते रहे इधर-उधर, पर रास्ता न मिला। अन्त में बेकी ने कहा, "चमगादड़ों का ख्याल न करो टॉम ! चलो, उसी रास्ते पर लौट चलें !"

टॉम वहीं खड़ा हो गया, फिर ज़ोर से चिल्लाया। गुफाओं में भयानक स्वर करती हुई गूंज गई उसकी आवाज़। बेकी बोली, "अब फिर न चिल्लाना टॉम, फिर न चिल्लाना, मुझे डर लगता है।"

टॉम ने फिर रास्ता ढूंढ़ने की कोशिश की, मगर बेकार।

बेकी घबराकर रुआंसे स्वर में बोली, "ओह टॉम, हम खो गए, हम खो गए ! अब हम इस भयानक स्थान से कभी नहीं निकल पाएंगे।"

और वह वहीं ज़मीन पर बैठकर फफक-फफककर रोने लगी। टॉम घबरा उठा। वह सोचने लगा कि कहीं बेकी रो-रोकर मर न जाए ! उसने बैठकर अपनी बांहों में भर लिया बेकी को। बेकी उसके सीने में मुंह छिपाकर सिसकने लगी। टॉम अपने को कोसने लगा कि वह उसे यहां क्यों ले आया। मगर बेकी ने अपनी नन्ही-नन्ही उंगलियां टॉम के होंठों पर रखकर चुप करा दिया उसे।

फिर वे दोनों एक-दूसरे को पकड़े हुए चलने लगे। टॉम ने बेकी की मोमबत्ती लेकर बुझा दी और केवल एक जलती हुई मोमबत्ती लेकर चलने लगा।

अन्त में बेकी थककर एक जगह बैठ गई। टॉम से वह घर के बारे में, मित्रों के बारे में और गांव के बारे में बातें करती रही। बेकी रोती रही और टॉम वहां से निकलने की

कोई तरकीब सोचने की कोशिश करता रहा।

एकाएक बेकी ने कहा, "मुझे बड़ी भूख लगी है टॉम!"

टॉम ने अपनी जेब से कुछ निकालकर दिखाया उसे। बोला, "देखो क्या है यह!"

बेकी के मुरझाए होंठों पर मुस्कराहट फैल गई। वह बोली, "हमारे विवाह का केक है यह, न टॉम?"

दोनों विचारों में खोए हुए खाते रहे धीरे-धीरे।

बेकी बोली, "जब वे हमें नहीं पाएंगे तो हमें ढूंढ़ने की कोशिश जरूर करेंगे।"

"हां, निश्चित रूप से वे हमें ढूंढ़ेंगे।"

"वे कब जान पाएंगे टॉम, कि हम लोग खो गए हैं?"

"जब नावें किनारे लगेंगी बेकी।"

जाने कितना समय बीत गया इसी तरह। एकाएक उन्हें हल्की-हल्की-सी आवाजें सुनाई दीं। कुछ आशा जगी मन में, किन्तु फिर कोई आवाज नहीं सुनाई दी। वे एक जल-स्रोत के निकट जा बैठे। बेकी उसकी बांहों के सहारे बैठी सिसक रही थी।

एकाएक टॉम को एक तरकीब सूझ गई। उसे पास ही कई रास्ते दिख रहे थे। इसलिए जेब से पतंग की डोरी निकालकर उसने उसे एक स्थान पर बांध दिया और बेकी को साथ लेकर एक तरफ चलने लगा; किन्तु उन्हें रास्ते में एक गढ़हा खड़ा दिखा और लौटकर फिर से उन्हें जल-स्रोत के निकट ही बैठ जाना पड़ा। टॉम ने फिर कोशिश की एक बार। किन्तु थोड़ी ही दूर गया होगा वह कि एक आदमी

एक कोने में हाथ में मोमबत्ती लिए हुए निकला। उसे देखते ही टॉम भय से कांप उठा। वह इंजुन जोय था। टॉम लौट आया अपने पुराने स्थान पर।

अब उनकी मोमबत्ती भी खत्म हो चुकी थी। गहरे अंधकार में बैठे हुए थे वे दोनों।

टॉम ने बेकी को फिर चलने के लिए कहा, तो उसने इनकार कर दिया। कहने लगी कि वह जहां है वहीं बैठी-बैठी मर जाएगी। टॉम जिधर जाना चाहता हो, जाए; वह उसका इंतजार करती रहेगी। टॉम से उसने कहा कि वह पतंग की डोर के सहारे रास्ता ढूंढना चाहता है तो जाए, मगर ज़रा-ज़रा देर में उससे मिल ज़रूर जाए। उसने टॉम से वादा करा लिया कि वह बेकी की मृत्यु के समय उसके पास मौजूद रहेगा और जब तक सब कुछ समाप्त नहीं हो जाएगा, तब तक उसका हाथ अपने हाथों में लिए रहेगा। टॉम ने झुककर उसका कंधा थपथपाया और फिर पतंग की डोर के सहारे रास्ता ढूंढने चल पड़ा।

उधर सेंट पीटर्सबर्ग में बड़ी उदासी छाई हुई थी। खोज जारी थी, किंतु टॉम और बेकी के वापस आने की आशा समाप्त हो चुकी थी। श्रीमती थैंकर और पाली मौसी का रोते-रोते बुरा हाल हो गया था।

मंगल की आधी रात। एकाएक सारे गांव में शोर मच गया। जो जिस हालत में था घर से निकल आया। लोग चिल्ला रहे थे, "देखो, देखो, वे लोग मिल गए! वे लोग मिल गए!" सारे गांव में रोशनी हो गई। उस रात फिर कोई

सो नहीं सका।

पाली मौसी की खुशी का ठिकाना न था। श्रीमती थैकर भी वहुत खुश थीं, किंतु उन्हें गुफा से अपने पति के लौटने का इंतज़ार था। उन्होंने अपने पति के पास संदेशवाहक भेज दिया था।

टॉम एक सोफे पर लेटे-लेटे अपने विचित्र अनुभवों को सुनाता रहा उत्सुक श्रोताओं को। उसने वताया कि कैसे कई रास्तों पर पतंग की डोर के सहारे जाने के वाद एक रास्ते पर उसे दिन की हल्की-सी रोशनी दिखाई दी, कैसे रेंग-रेंगकर आगे वढ़ने के वाद गुफा से निकलने का एक छोटा-सा रास्ता उसे दिखा और मिसीसिपी नदी वहती दिखाई दी और फिर कैसे वेकी को लेकर एक लंवे समय के वाद वह दिन की रोशनी में आया।

टॉम और वेकी कई दिन तक विस्तर पर ही पड़े रहे। उठना-वैठना भी मुश्किल हो रहा था उनके लिए।

टॉम को हक्लिवरी की वीमारी का भी पता चला, किंतु वह उससे मिल नहीं पाया; क्योंकि हक्लिवरी की हालत ऐसी नहीं थी कि उससे किसी तरह की उत्तेजनापूर्ण वात की जा सके। श्रीमती डगलस वरावर उसकी सेवा-सुश्रूषा कर रही थीं।

११



उस दिन जब न्यायाधीश थैकर ने बताया कि उन्होंने गुफा के दरवाज़े पर एक लोहे का दरवाज़ा लगवा दिया है, तो टॉम का चेहरा फक हो गया। जल्दी से पानी पिलाया गया उसे तो उसका मन शांत हुआ। न्यायाधीश थैकर ने पूछा, "क्या बात थी बेटे टॉम ?"

"इंजन जोय गुफा में है !"

मिनटों में यह खबर कस्बे-भर में फैल गई। ढेर के ढेर आदमी मैक्डागल की गुफा की तरफ चल पड़े। टॉम न्यायाधीश थैकर के साथ था।

गुफा का दरवाज़ा खोला गया। इंजुन का मृत शरीर पड़ा हुआ था दरवाज़े पर ही। उसका चेहरा दरवाज़े की ओर था, जैसे वह मरते समय भी बाहर की रोशनी देखने की कोशिश कर रहा था। इंजुन का चाकू उसके निकट पड़ा हुआ था। उसका फल टूटकर दो हो गया था, शायद उसने चाकू से दरवाज़े के कुलाबों को काट डालने की कोशिश की थी।

उसे गुफा के निकट ही दफना दिया गया।

कुछ दिन बाद एक दिन सुबह ही टॉम ने हकिलबरी को बताया कि उसका खयाल है कि वह खजाना गुफा में ही है, जिसे इंजुन पा गया था। बस, फिर क्या था! चल पड़े वे दोनों खजाने की खोज में। टॉम हकिल को उसी रास्ते से गुफा के अन्दर लिवा ले गया, जिससे वह बेकी को लेकर निकला था।

वे खजाने की देर तक खोज करते रहे, पर निराशा के सिवा और कुछ हाथ न लगा।

किंतु एकाएक उन्हें वहां लकड़ी का एक संदूक दिखाई दिया। उन्होंने उसे खोला तो सचमुच खजाना हाथ लग गया। उन दोनों ने अपने थैलों में सारा धन भर लिया।

संदूक में दो बंदूकें थीं और कुछ और सामान भी था। हकिल ने वह सब भी ले चलने को कहा; किंतु टॉम ने उसे यह कहकर रोक दिया कि भविष्य में जब वे डाकू बनेंगे तो ये बंदूकें काम देंगी, क्योंकि वे गुफा को ही अपना अड्डा बनाएंगे।

टॉम और हकिलबरी धन-दौलत लेकर कस्बे की ओर जा ही रहे थे कि बूढ़े दादा वेल्शमैन मिल गए। वे ज़बर्दस्ती पकड़ ले गए दोनों को श्रीमती डगलस के यहां। गांव के सभी बड़े-बड़े लोग वहां मौजूद थे।

टॉम और हकिल को नहला-धुलाकर नये कपड़े पहनाए गए। फिर पार्टी शुरू हुई। दादा वेल्शमैन ने अब भाषण देना शुरू किया, जिसमें उन्होंने बताया कि श्रीमती डगलस की जान बचाने में उनका और उनके लड़कों का ही नहीं, एक

अन्य व्यक्ति का भी हाथ था, और यह व्यक्ति था हकिलबरी।

श्रीमती डगलस अत्यधिक कृतज्ञता से देखने लगीं हकिल की ओर। उन्होंने कहा कि वे उसे अपने घर में रखकर उसे पढ़ाने-लिखाने को तैयार हैं। उन्होंने यहां तक कहा कि वे जब कभी रुपये बचा सकेंगी तो हकिल के लिए कोई व्यवसाय शुरू करा देंगी।

अब टॉम के बोलने का मौका आ गया था। वह बोला, "हकिल को इसकी ज़रूरत नहीं। उसे आप गरीब न समझें। वह अमीर है, बहुत अमीर !"

सब लोग चौंक पड़े। किसीको टॉम की बात पर विश्वास नहीं हुआ। और तब टॉम बोला, "अरे, आप लोगों को हंसी आ रही है मेरी बात पर ! हकिल सचमुच बहुत अमीर है। मैं आप लोगों को दिखा सकता हूं।" और वह दरवाजे की ओर दौड़ गया।

टॉम किसी तरह झोले को उठाकर ले आया और सोने के ढेर सारे सिक्के उन लोगों के सामने उंडेल दिए।

"देखिए, मैंने आपसे कहा था न ! इसका आधा हकिल का है और आधा मेरा।"

लोग आश्चर्य से आंखें फाड़े देखते ही रह गए। बहुतों ने तो कभी इतने सारे सिक्के एकसाथ देखे ही नहीं थे। सिक्के गिने गए। बारह हज़ार डालर थे।

श्रीमती डगलस ने हकिल के रुपयों को छः प्रतिशत व्याज पर उधार दिला दिया और पाली मौसी के अनुरोध पर न्यायाधीश थैकर ने टॉम के धन का भी इसी तरह का उपयोग

करवा दिया। इस तरह दोनों को एक डालर प्रति सप्ताह की आमदनी हो गई।

न्यायाधीश थैंकर टॉम की प्रशंसा करते न थकते थे। उनका कहना था कि टॉम के स्थान पर और कोई साधारण लड़का होता, तो कभी उनकी बेटी को गुफा के बाहर नहीं ला पाता। वे चाहते थे कि टॉम एक महान वकील या सेनानी बने।

और हकिल को श्रीमती डगलस भी एक महान व्यक्ति बनाना चाहती थीं। उसे अब साफ-सुथरा रहना पड़ता, छुरी-कांटे से भोजन करना पड़ता और पढ़ना-लिखना पड़ता। हकिल के लिए यह सब कुछ एक असह्य बंधन, एक भयंकर बोझ बन गया।

तीन हफ्ते तक वह ये सारे कष्ट उठाता रहा, और फिर एक दिन श्रीमती डगलस के यहां से गायब हो गया। श्रीमती डगलस ने उसकी बहुत खोज करवाई, किंतु कहीं पता न लगा। टॉम भी ढूंढ़ने निकला और उसने खोज ही निकाला उसे। पुराने बूचड़खाने के पीछे एक गंदी-सी छायादार जगह पर पड़ा सो रहा था हकिलबरी। चुराकर लाई गई चीजें खाकर वह वहां सो गया था। उसके कपड़े फटे-पुराने थे, बाल बिखरे हुए थे, सारे बदन पर धूल-गर्द लिपटी हुई थी, किंतु उसके चेहरे पर अपार शांति और गहरा संतोष झलक रहा था।

हकिल को जगाकर टॉम ने उससे श्रीमती डगलस के यहां से भागने का कारण पूछा तो वह बोल

करवा दिया। इस तरह दोनों को एक डालर प्रति सप्ताह की आमदनी हो गई।

न्यायाधीश थैकर टॉम की प्रशंसा करते न थकते थे। उनका कहना था कि टॉम के स्थान पर और कोई साधारण लड़का होता, तो कभी उनकी बेटी को गुफा के बाहर नहीं ला पाता। वे चाहते थे कि टॉम एक महान वकील या सेनानी बने।

और हकिल को श्रीमती डगलस भी एक महान व्यक्ति बनाना चाहती थीं। उसे अब साफ-सुथरा रहना पड़ता, छुरी-कांटे से भोजन करना पड़ता और पढ़ना-लिखना पड़ता। हकिल के लिए यह सब कुछ एक असह्य बंधन, एक भयंकर बोझ बन गया।

तीन हफ्ते तक वह ये सारे कष्ट उठाता रहा, और फिर एक दिन श्रीमती डगलस के यहां से गायब हो गया। श्रीमती डगलस ने उसकी बहुत खोज करवाई, किंतु कहीं पता न लगा। टॉम भी ढूंढ़ने निकला और उसने खोज ही निकाला उसे। पुराने बूचड़खाने के पीछे एक गंदी-सी छायादार जगह पर पड़ा सो रहा था हकिलबरी। चुराकर लाई गई चीजें खाकर वह यहां सो गया था। उसके कपड़े फटे-पुराने थे, बाल बिखरे हुए थे, सारे बदन पर धूल-गर्द लिपटी हुई थी, किंतु उसके चेहरे पर अपार शांति और गहरा संतोष झलक रहा था।

हकिल को जगाकर टॉम ने उससे श्रीमती डगलस के यहां से भागने का कारण पूछा तो वह बोला, "वहां के बारे